

ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 28

जून - 2026

अंक - 06

माउंट आबू

Rs. - 20

आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा पर महारसमेलन



ओआरसी मंत्राजाम (हरिवाणा)।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने चतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। "आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा" विषय पर आलोक जी ने कहा कि आध्यात्मिकता ही जीवन का वास्तविक सुख है। ब्रह्माकुमारी संस्थान के जीवन में इसका स्वरूप नजर आता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी द्वारा विश्व में आध्यात्मिक चेतना की जागृति सतयुग के आने की आहट पैदा कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि संस्थान में किसी विशेष धर्म से नहीं बल्कि अनेक धर्मों के लोग सम्मिलित हैं। आत्मा ईश्वरीय गुणों का स्वरूप है। प्रत्येक व्यक्ति में इन ईश्वरीय गुणों का सम्मान करना ही ईश्वर का सम्मान करना है। उन्होंने ये भी बताया कि दो वर्ष पूर्व वे

संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू में गए थे। जहाँ उन्हें अपार ऊर्जा का अनुभव हुआ। दिव्य शक्ति अखाड़ा, सहरानपुर से महामंडलेश्वर कमल किशोर जी महाराज ने कहा कि कर्म का सबसे बड़ा महत्व है। कर्म का फल अवश्य मिलता है। पूर्व में किए कर्मों के प्रभाव से हम ईश्वरीय स्मृति से ही मुक्त हो सकते हैं। ईश्वरीय प्रेम ही सर्व सुखों का आधार है। मुंबई से महामंडलेश्वर स्वामी प्रेमानंद गिरि जी महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारी नारी शक्ति उत्थान का प्रमुख केंद्र है। उन्होंने ये भी कहा कि जहाँ संत हैं वहाँ बसंत है। ब्रह्माकुमारी संस्थान राजयोग के द्वारा विश्व में सनातन संस्कृति के पुनर्जागरण का भगौरथ कार्य कर रहा है। महामंडलेश्वर स्वामी शिव स्वरूपानंद जी महाराज, जोधपुर ने कहा कि सनातन संस्कृति का मूल अहिंसा है। अहिंसा परम धर्म है। उन्होंने कहा कि शान्ति के लिए क्रान्ति जरूरी है। सबसे बड़ी क्रान्ति वैचारिक क्रान्ति है। विचारों के शुद्धिकरण से ही शान्ति का उद्गम होता

है। श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी कृष्णानंद जी महाराज, मथुरा ने कहा कि आध्यात्म सनातन धर्म की आत्मा है। बिना आध्यात्म के सनातन धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती। आध्यात्मिकता से ही विश्व में शान्ति स्थापन हो सकती है। प्रथम वाल्मीकि आदि शंकराचार्य गिरधारी जी महाराज, अमृतसर ने कहा कि

महाराज ने कहा कि धर्म केवल सनातन धर्म है। धर्म कभी किसी का अहित नहीं करता। आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी महाराज, मोदीनगर ने कहा कि अगर चेतना की जागृति नहीं है तो सोना और जागना तो केवल एक मशीन के समान है। हमारा मन हमारे जन्म का कारण है। इस अवसर पर संस्थान की संयुक्त

दियाए गए अस्त्र-शस्त्र बाहरी हिंसा नहीं बल्कि मनोविकारों पर जान और योग के द्वारा विजय प्राप्त करने के सूचक हैं। आदि सनातन धर्म हमें सभ्यता और दिव्यता का पाठ पढ़ाता है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक शक्ति के लिए तपस्या जरूरी है। उन्होंने कहा कि जब सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है तो नकारात्मक ऊर्जा स्वतः समाप्त हो जाती है। धार्मिक प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी, प्रयागराज ने कहा कि सनातन संस्कृति का पुनर्जागरण ही सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य है। जीबी पंत हॉस्पिटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने अपने आध्यात्मिक जीवन के अनुभव सबके साथ साझा किए। राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, माउण्ट आबू ने भी सभा को संबोधित किया। मंच संचालन राजयोगिनी ब्र.कु. बीना एवं ब्र.कु. श्रीनिधि ने किया। कार्यक्रम में देशभर से सैकड़ों साधु-संतों सहित 800 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

- अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन
- ब्रह्माकुमारी के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में हुआ उल्लसक अवकाश
- आध्यात्मिकता में ही जीवन का वास्तविक सुख है- आलोक कुमार
- अष्टि स्वरूप धर्म सभ्यता और दिव्यता का संदेश देता है- राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी
- देश के विभिन्न प्रांतों से पहुंचे सैकड़ों संत महाराज

सनातन संस्कृति के महर्षि वाल्मीकि का विशेष महत्व है। क्योंकि उन्होंने श्रीराम के जीवन दर्शन से सनातन संस्कृति का परिचय दिया। हिंदू सेना के राष्ट्रीय महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद गिरि जी

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि हिंसा केवल तलवार से ही नहीं होती। बल्कि मन और वचन से भी दूसरों को दुःख देना हिंसा है। उन्होंने कहा कि देवी-देवताओं को

मॉस्को-रहिया।

हिंदू स्वयंसेवक संघ भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समान अंतर्राष्ट्रीय संगठन है और यह हिंदू प्रवासी समुदाय पर ध्यान केंद्रित करता है। राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी को ब्रह्माकुमारी संस्था से परिचित होने और राजयोग की बुनियादी बातें सीखने के लिए मॉस्को स्थित एचएसएस के प्रमुख श्री शिवतिज ने नवरूज दिवस पर आमंत्रित किया। उन्होंने दीदी का स्वागत करते हुए कहा कि "दीदी जी, मेरा मानना है कि ब्रह्माकुमारी के सदस्य दुनिया भर में कई तरह की अज्ञात और नकारात्मक ऊर्जा होने के बावजूद भी कार्य, जीवन और समाज में सकारात्मक और एकाग्र मानसिकता बनाए रखते हैं।" हमें खुशी है कि दीदी ने हमें राजयोग सिखाने के लिए आने की सहमति दी है।" कार्यक्रम की शुरुआत कुछ मिनट परमात्मा की याद से हुई। इसके बाद सुधा दीदी ने उपस्थित एचएसएस सदस्यों के भाइयों

मॉस्को में 'हिंदू स्वयंसेवक संघ' ने सीखा राजयोग



को आत्मा और उसके स्वरूप के बारे में जानकारी दी तथा परमात्मा (ईश्वर) के स्वरूप को भी परिभाषित किया। सभी ने ब्रह्माकुमारी व एचएसएस के कार्य को परस्पर विस्तार से जाना। जोकि दोनों का लक्ष्य मानवता के उत्थान से जुड़ा

हुआ है। ब्रह्माकुमारी संगठन और विश्व स्तर पर इसको व्यापक गतिविधियों से परिचित हुए। इस दौरान विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर सत्र में राजयोग मेडिटेशन के बारे में रुचिपूर्वक गहनता से जाना और उसकी अनुभूति भी की। यहाँ पर

एक अनोखा अनुभव हुआ कि मेडिटेशन में आँखें खुली रखके मेडिटेशन कराया गया। उन्हें यह भी समझाया गया कि ब्रह्माकुमारी कैसे मानती हैं कि भारत का प्राचीन योग आधुनिक युग में दोहराया जा रहा है।

नवरूज : मॉस्को में नवदिवस का त्योहार वसंत ऋतु का नव वर्ष, नवरूज शान्ति और मित्रता का त्योहार है और यह दुनिया भर के लाखों लोगों को एकजुट करता है। जैसा कि सर्वविदित है, इस त्योहार की जड़ें मध्य पूर्व और मध्य एशिया की प्राचीन परंपराओं में निहित हैं। 2009 में, यूनेस्को ने "नवरूज" को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया और 2010 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय नवरूज दिवस घोषित किया। वसंत



विषुव का वह दिन, जब दिन और रात संतुलन में होते हैं और एक-दूसरे की ओर देखते हैं, नवरूज का जन्म होता है। यह एक नया दिन, एक नया साल और एक नया जीवन है जो नई आशाएं लेकर आता है। यह दिन विश्वभर में 3 करोड़ से अधिक विशेष रूप से ईरान, अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, अज़रबैजान, तुर्की और कुर्द तथा मध्य एशियाई समुदायों द्वारा मनाया जाता है। मॉस्को हाउस ऑफ नेशनैलिटीज में "राष्ट्रीय अवकाश" परियोजना के अंतर्गत नवरूज का उत्सव रूस के बन एकता वर्ष को समर्पित था।



योग बने आदत, तो जीवन बने शानदार



डॉ. राजयोगिनी ड.डी. दीदी

आज की तेज रफ्तार और प्रतिस्पर्धात्मक जीवनशैली में व्यक्ति शारीरिक थकान, मानसिक तनाव और भावनात्मक असंतुलन से जूझ रहा है। ऐसे समय में योग केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि संतुलित और स्वस्थ जीवन जीने की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। यदि योग को हम केवल एक दिन की गतिविधि न मानकर अपनी आदत बना लें, तो जीवन वास्तव में शानदार बन सकता है।

योग : केवल अभ्यास नहीं, जीवनशैली
योग का अर्थ है - जुड़ना। यह जुड़ाव शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है। अधिकांश लोग योग को केवल शारीरिक व्यायाम या आसन तक सीमित समझते हैं, जबकि वास्तव में योग एक सम्पूर्ण जीवनशैली है। यह हमें न केवल स्वस्थ शरीर देता है, बल्कि एक शांत, स्थिर और सकारात्मक मन भी प्रदान करता है।

आदत का विज्ञान और योग

मनुष्य का जीवन उसकी आदतों से निर्मित होता है। जो कार्य हम नियमित रूप से करते हैं, वही हमारे संस्कार बन जाते हैं। योग का भी यही सिद्धान्त है - यदि इसे निरंतर अभ्यास में लाया जाए, तो यह हमारे जीवन का स्वाभाविक हिस्सा बन जाता है।

जैसे हम प्रतिदिन भोजन करते हैं, वैसे ही यदि हम प्रतिदिन कुछ समय योग को दें, तो यह हमारी दिनचर्या में सहज रूप से शामिल हो जाता है। धीरे-धीरे शरीर इसकी लय को स्वीकार कर लेता है और मन भी इसके बिना अधुरा महसूस करने लगता है।

शारीरिक और मानसिक लाभ

नियमित योगाभ्यास शरीर की विभिन्न प्रणालियों को संतुलित करता है। यह श्वसन तंत्र को सुदृढ़ बनाता है, रक्त संचार को बेहतर करता है और शरीर की ऊर्जा को संतुलित करता है। इससे शरीर में लचीलापन, शक्ति और सहनशीलता बढ़ती है।

मानसिक स्तर पर योग तनाव, चिंता और अवसाद को कम करने में अत्यंत प्रभावी है। यह मन को स्थिरता और स्पष्टता प्रदान करता है। जब मन शांत होता है तो निर्णय लेने की क्षमता भी बेहतर हो जाती है और व्यक्ति हर परिस्थिति का सामना संतुलित रूप से कर पाता है।

राजयोग - मन का प्रबंधन

योग के साथ यदि राजयोग का समावेश हो जाए, तो इसका प्रभाव और गहरा हो जाता है। राजयोग हमें अपने मन पर नियंत्रण रखना सिखाता है। यह हमें ये समझने में मदद करता है कि हमारे विचार ही हमारे कर्मों और जीवन की दिशा तय करते हैं।

जब मन सशक्त और सकारात्मक होता है, तो हम अपने लक्ष्य के प्रति अधिक जागरूक और प्रतिबद्ध रहते हैं। टालमटोल, आलस्य और नकारात्मकता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

सुबह की शुरुआत : सफलता की कुंजी

योग को आदत बनाने के लिए सुबह का समय सबसे उपयुक्त माना गया है। ब्रह्ममूर्त या सुबह का शांत वातावरण मन को एकाग्र और ऊर्जा से भर देता है। यदि दिन की शुरुआत सकारात्मक विचारों, प्राणायाम और ध्यान से हो, तो पूरा दिन अधिक उत्पादक और संतुलित रहता है।

यह अभ्यास मन रूपी "बैटरी" को चार्ज करता है जिससे हम दिनभर की चुनौतियों का सामना सहजता से कर पाते हैं।

अतः योग कोई तात्कालिक उपाय नहीं, बल्कि एक स्थायी समाधान है। इसे केवल विशेष अवसरों तक सीमित रखना इसके वास्तविक महत्व को कम कर देता है। आवश्यकता है इसे अपनी आदत, संस्कार और जीवनशैली का हिस्सा बनाने की।

जब योग हमारे जीवन में नियमित रूप से शामिल हो जाता है तब न केवल हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि मन शांत और आत्मा संतुष्ट होती है। यही संतुलन हमें एक शानदार, सफल और सार्थक जीवन की ओर ले जाता है।

वर्तमान समय साधनों के विस्तार में बहुत चले गये हैं और मार जो साधना है उसमें थोड़ी कमी पड़ गई है। अभी बाबा हमसे चाहता है कि बच्चों की साधना ऐसी पक्की हो जो कोई भी साधन हमको हिला न सके। मान लो अभी हम शांत में बैठे हैं, लाइट चली गई। तो ऐसे नहीं यही संकल्प चलता रहे कि लाइट क्यों गई? लाइट के दफ्तर वाले अच्छे नहीं हैं, काम करते ही नहीं, आजकल के हैं ही ऐसे... परन्तु मेरा काम यह नहीं है कि हम उनका सोचें। ऐसे फालतू कॉमन संकल्प हमारे चल गये तो साधन ने मेरे मन की स्थिति को खींच लिया। मन की स्थिति एकाग्र नहीं हुई, तो साधना पॉवरफुल नहीं रही। साधना तो हम सब करते हैं और साधना चलते-फिरते भी हो सकती है लेकिन साधन के वश न हो, स्थिति कमल पुष्प समान हो।

कई बार हम कर्म कॉन्शियस हो जाते हैं, बॉडी कॉन्शियस भी नहीं होते, सोल कॉन्शियस भी नहीं हैं, कर्म कॉन्शियस हो जाते हैं जैसे कि यह काम ऐसे करना है, यह किया, यह ठीक हुआ, यह नहीं हुआ... ऐसे नैचुरल कर्म कॉन्शियस का संकल्प चलता है लेकिन जिस कर्म का अभ्यास है वह कर्म करते हुए हम साधना में रहें। हाथ-पांव का जो काम है, वह बहुत हल्का है तो उसमें बुद्धि को शिवबाबा के तरफ एकाग्र होके लगा सकते हैं। थोड़ा भी टाइम मिला तो हम अपनी साधना में गुम हो सकते हैं। गुम होना माना ऐसे नहीं कि सिर्फ अशरीरी हो जाएं, लेकिन इसके साथ कन्ट्रोलिंग पॉवर भी चाहिए। अगर हमारी साधना अच्छी है तो कोई भी उल्टा काम मेरे से नहीं हो सकता है।



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कर्म करते हुए भी हम साधना में रहें

अभी भी साधना करने का समय है। लेकिन जब हलचल शुरू हो जाएगी तो उस हलचल का सामना करने में भी टाइम देना पड़ेगा। उस समय अभ्यास नहीं होगा फिर साधना नहीं कर सकेंगे और हलचल में टिक नहीं सकेंगे इसीलिए बाबा बार-बार भिन्न-भिन्न रूप से इशारा दे रहा है। एक तो कर्म के बन्धनों को चेक करो, एकदम मैं कतौन हूँ? किसी भी तरफ लगाव तो नहीं है? कोई गुण या कोई स्वभाव के प्रति किसी से विशेष आकर्षण तो नहीं है? सच्ची और पॉवरफुल साधना के लिए हमारे मन का लगाव कहीं भी नहीं होना चाहिए। मन बुद्धि को क्लीयर रखना - यह साधना के लिए बहुत जरूरी है।

जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल के समय हम टाइम निकालते हैं, ऐसे हम बीच-बीच में थोड़ा समय सभी निकालें तो साधना का अनुभव कर सकते हैं लेकिन इसमें अटेन्शन और अभ्यास चाहिए, मन पर कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए। लेकिन कन्ट्रोलिंग पॉवर तब आयेगी जब यह मुझे निश्चय हो कि मैं मालिक हूँ, आत्मा हूँ। उस मालिकपन के नशे से आप स्वयं को कन्ट्रोल कर सकते हो।

जिनका एक बाबा से दिल का प्यार है उनको याद की मेहनत नहीं करनी पड़ती। बस, बाबा कहा और बाबा में समा गये, वानी लव में लीन हो गये। यह लवलीन अवस्था ऐसी है जो दो अलग-अलग होते भी एक है। लवलीन माना लव में एकदम समा जायें और कुछ नजर नहीं आये। जैसे सागर में खो गये तो वह लवलीन अवस्था जो है वह प्यारी और ऊंची है। कर्म का बन्धन चाहे पास्ट का, चाहे वर्तमान का लेकिन खींचे नहीं। कर्म करें लेकिन न्यारे होकर कर्म भी पूरा करें और जिसके साथ कर्म में आते हैं, उसके भी प्यार बनें और बाबा के भी प्यार बनें। इसे ही विदेही अवस्था भी कहा जाता है।

अभी भी साधना करने का समय है। लेकिन जब हलचल शुरू हो जाएगी तो उस हलचल का सामना करने में भी टाइम देना पड़ेगा। उस समय अभ्यास नहीं होगा फिर साधना नहीं कर सकेंगे और हलचल में टिक नहीं सकेंगे इसीलिए बाबा बार-बार भिन्न-भिन्न रूप से इशारा दे रहा है। एक तो कर्म के बन्धनों को चेक करो, एकदम मैं कतौन हूँ? किसी भी तरफ लगाव तो नहीं है? कोई गुण या कोई स्वभाव के प्रति किसी से विशेष आकर्षण तो नहीं है? सच्ची और पॉवरफुल साधना के लिए हमारे मन का लगाव कहीं भी नहीं होना चाहिए। मन बुद्धि को क्लीयर रखना - यह साधना के लिए बहुत जरूरी है।

शान उसी में है जो हीरो पार्ट बजाये

बाबा ने हम सबको ब्राह्मण जीवन के नियम संयम बताया है। अगर हम चलते-फिरते, खाते-पीते हैं तो यह शोभता नहीं है। खुशी में शान्ति से बैठकर याद में खाओ-पीओ तो थोड़े में ही ताकत मिल जाती है। तो बड़े प्यार से, बड़ी एकाग्रता से ब्रह्मभोजन करना है क्योंकि ब्रह्मभोजन बहुत पॉवरफुल है, इसके लिए कहते हैं कि देवताएं भी तरसते हैं। सतयुग में देवताओं को यह ब्रह्मभोजन थोड़े ही मिलेगा। ऐसा भण्डारा और ऐसे भोजन बनाने वाले भी नहीं होंगे। भोग भी नहीं लगेगा। इसलिए अभी भोग लगाने वाले को भी एक्स्ट्रा लगाना है। बनाने वाले को भी एक्स्ट्रा बनाना है और खाने वाले को भी उसी महत्व से खाना है कि हम ब्रह्मभोजन खा रहे हैं।

जो स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण हैं उन्हें स्मृति रहती हम सो, सो हम... हम सो थे वो अभी हम बन रहे हैं। इस शरीर में होते हुए चेक करो कि ज्ञान में आने से पहले मेरा संकल्प कैसा था? अब कैसा है? वन्दरफुल! रहम, सच्चाई, प्रेम संकल्प में आ गया है। अगर मेरे संकल्प में रहम नहीं है तो वो कोमल दिल है या कठोर दिल है। हमारे दिल में रहम, सच्चाई और प्रेम हो तो संकल्प दृष्टि और कर्म भी ऐसे ही होंगे।



राजयोगिनी दादी जानकी जी

उसमें अगर कोई साधारणता है तो चलने-फिरने, सोचने में भी साधारणता होगी। भले बुद्धि बहुत अच्छी है पर रहमदिल नहीं है, किसके दिल को जल्दी समझ करके बाबा से उनको मदद दिलावे वो अन्दर से बुद्धि काम नहीं करती है।

निश्चय और भावना दोनों जब कम्बाईट हैं तो विश्वास जल्दी बैठ जाता है। कहेगा मुना था कुछ और, देखा कुछ और। कइयों का यहाँ आ करके, देखने से, अनुभव करने से विश्वास बैठ जाता है क्योंकि रहम, स्नेह, सच्चाई का अनुभव किया, जो दुनिया में कहीं से भी किसको यह अनुभव हो नहीं सकता। कुछ न कुछ स्वार्थ भाव होगा। वो भले बाप-बेटा हो, उसकी मर्जी से नहीं चला तो कहेगा तू मेरा बेटा नहीं है या तो बाप, बाप नहीं है। यहाँ तो बाप-बेटे का सम्बन्ध जुटता है, पर भाई-भाई, बहन-भाई का सम्बन्ध भी जुटता है। किसी बाहर वालों को कहे कि तुम मेरा भाई हो तो उनको इतनी खुशी होती है, बात मत पूछो। पूरा ज्ञान सुनने से पहले उनको इसी एक शब्द से विश्वास होने लगता है। तो हमारा बहन-भाई का जो रिश्ता है वो बड़ा सुखदाई है। भाई-भाई की दृष्टि से सृष्टि महासुखकारी बन जाती है।

भाई-भाई की दृष्टि का कोर्स बड़ा है, इसमें जो पास हुआ उसका बेड़ा पार। जैसे मम्मा समान सदैव रूहानियत में रहने से बाबा अपनी शक्ति भर देता है तब तो आत्मा में शिव की शक्ति भरेगी और शिवशक्ति के रूप में गायन होगा। शिव मेरा साथी तो क्या बल्कि शिव की शक्ति मेरे पास है। तो साक्षी हो करके पार्ट प्ले करना, यह हीरो पार्टधारी की निशानी है। हीरो जो होता है, वो हर पार्ट के बीच में हाज़िर होता है फिर भी उसका सबसे न्यारा पार्ट होता है इसलिए सबको अच्छा लगता है।

हमें पास विद ऑनर होना है तो ऐसा श्रेष्ठ पार्ट बजाना है। ऐसे नहीं पास होने जितनी मार्क्स मिली तो खुश हो जाये। शान उसी में है जो हीरो पार्ट बजाये। कोई भी बात हुई साक्षी हो करके पार्ट प्ले किया, बाबा साथी है, मेरे को साक्षी बना करके अच्छा पार्ट प्ले करना सिखाया है। हम हर पार्टधारी के पार्ट में साक्षी हैं। तो साक्षीपन को स्टेज पर रहते अपना पार्ट बजाना और शिव बाप को साथी बना देना तब कहेंगे शिव और शक्ति दोनों कम्बाईट हैं।

बाबा हम बच्चों को कहता बच्चे तुम मेरे होलिएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट बच्चे हो। साथ-साथ हमको ऊंची चोटी पर ले जाने के लिए रोज़ बुद्धि की यह डिल कराता कि बच्चे एक

है सिर्फ स्वयं ही अटेन्शन रखो। अटेन्शन है तो बुद्धि सहज अनुभव करेंगी, अटेन्शन होगा तो सम्पन्नता तक पहुँचने में मेहनत या ब्रह्म अनुभव नहीं होगा। इसके लिए समय प्रति समय जो सम्पन्न बनने के लिए बाबा ने इशारे दिए हैं वह याद रखो, उन पर मनन चिंतन करो।

सबसे पहले हर एक अपने आपसे पूछे कि स्वयं में फेथ है कि मैं पुरुषार्थ कर लास्ट सो फास्ट आऊंगा? मैं ही सम्पन्न बना था और बनूँगा? मेरे संस्कार कहा अथवा पुराने कोई भी बंधन हैं, मैं उन

कल्प पहले वाले वही बाबा के बच्चे हैं जो कल्प पहले भी विजयी बने हैं, जिसका यादगार वैजयन्ती माला है।

बाबा ने हमें तीव्र पुरुषार्थ करने लिए समय दिया है, जैसे यूनिवर्सिटी में भी टाइम होता कि यह कोर्स इतने समय में पूरा करना है फिर पेपर होगा। तो हमें भी बाबा सम्पन्न बनने के लिए टाइम देता है। फिर बीच-बीच में पेपर भी लेता है। उस पेपर में पास होने के लिए अमूवले जब उठते हैं तो अपनी सम्पन्नता की स्टेज को याद करो।

हमारे सामने सम्पन्नता को स्टेज है - ब्रह्मा बाबा। साकार में भी ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बन प्रैक्टिकल में फरिश्ता स्थिति का हम सबको अनुभव कराते रहे और अभी उसी सम्पन्न फरिश्ता रूप से अव्यक्त वतन में भी हम बच्चों से रूहिरहान करते अथवा बाप-दादा मिलकर इस साकार दुनिया में भी आते। तो सम्पन्नता का एजापल साकार है, साकार से आकार बाबा, निराकार बाबा।

हमें भी ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनना है। तो हमारी सम्पूर्णता के समीपता की स्थिति है कि पहले हम अपने को फरिश्ता बनावें। फरिश्ता अर्थात् जो इस देह और देह के बन्धन हैं, उन बन्धनों से मुक्त। जो भी पुराने संस्कार-स्वभाव हैं, दृष्टि वृत्ति है, वह सब हमारा परिवर्तन हो जाए। तो इन सबमें कितने परसेन्ट परिवर्तन हुआ है? मास्टर बन खुद ही खुद चेक करें क्योंकि यह पुराने स्वभाव-संस्कार ही हमारे बंधन हैं और इन्हें को परिवर्तन करना उसको ही कहेंगे बन्धनमुक्त अर्थात् जीवनमुक्त बनना।

सबसे पहले खुद से पूछना है कि इस जीवन में मैं आत्मा सभी सूक्ष्म व स्थूल बन्धनों से स्वतंत्र हूँ? मुक्त हूँ या मेरे संस्कार-स्वभाव जंजीर की तरह बन्धन में रखते हैं? जग भी कोई बन्धन होगा तो कभी भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं होगा।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हरेक सूक्ष्म कमजोरी के संकल्प को बाबा के सामने दान कर दो

सेकण्ड में इस साकारी दुनिया से पार आकारी और निराकारी दुनिया में चले जाओ। डिल करो - अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी और अभी-अभी निराकारी।

सेकण्ड में उड़ते कला का अनुभव करने के लिए बुद्धि इतनी हल्की हो जो किसी भी घड़ी इस देह से न्यारी बन जावे। बार-बार यह बात बाबा सुनाता है कि तुम अपने बुद्धि पर बोझ अनुभव नहीं करो। कार्य व्यवहार करो परन्तु अपने को मैं करता हूँ या मेरा यह काम है, यह मैं और मेरे का बोझ अपने सिर पर नहीं रखो। जिम्मेवार बाबा है, हम निर्मित उनकी श्रीमत् पर चलते चलें।

समय तीव्र गति से चलता रहता, तो हमें भी ऐसा हो तीव्रगति से अपने को बाबा के इशारों अनुसार पुरुषार्थ करना है और पुरुषार्थ का लक्ष्य

सब संस्कारों को, बन्धनों को पुरुषार्थ कर परिवर्तन कर सकता हूँ?

सूक्ष्म में भी यह संकल्प तो नहीं आता कि ऐसी स्थिति तो मेरे लिए बड़ी मुश्किल है। आज से हरेक इस सूक्ष्म कमजोरी के संकल्प को बाबा के सामने दान कर दो। जबकि बाबा कहता है तुम बच्चों से मेरा वायदा है कि तुम एक कदम आगे बढ़ो तो मैं दस कदम क्या 100 कदम आगे आऊंगा। "हिम्मते बच्चे मददे बाबा।" तुम निश्चयबुद्धि बनो तो विजय अवश्य समाई हुई है।

सबसे पहला चाहिए स्वयं ही स्वयं पर सम्पूर्ण फेथ। फूल फेथ रखो तो बाबा की मदद ऑटोमैटिक मिलेगी। यह भी एक बहुत बड़ा वरदान मिल जाता। तो पहले स्वयं पर फेथ जो फिर बाबा के ऊपर फेथ हो। साथ-साथ यह भी फेथ चाहिए कि हम



मम्मा का जीवन

एक चलता-फिरता

आध्यात्मिक पाठशाला



मम्मा का जीवन हमें सबसे पहले यह सिखाता है कि आध्यात्मिकता केवल पुस्तकों या वचनों तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसे जीवन में उतारना ही सच्ची साधना है। परमात्मा शिव के ज्ञान को उन्होंने केवल सुना नहीं, बल्कि उसे अपने प्रत्येक कर्म में ढाल लिया। यही कारण था कि उनका हर व्यवहार, हर निर्णय और हर शब्द एक गहरी आध्यात्मिक सीख बन जाता था।

छोटी आयु में ही मम्मा ने जिस प्रकार मातृत्व का स्वरूप धारण किया, वह अद्भुत था। वे हर आत्मा को स्नेह, शक्ति और मार्गदर्शन देती थीं। उनके भीतर एक ऐसी दिव्य ममता थी, जो हर किसी को अपनेपन का अनुभव कराती थी। इस कारण उन्हें "जगदम्बा" कहा गया - एक ऐसी माता, जो सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं की सच्ची पालना करती है।

मम्मा को "सरस्वती" भी कहा जाता है, क्योंकि वे ज्ञान की गहराइयों में जाकर उसे अत्यंत सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करती थीं। कठिन से कठिन आध्यात्मिक रहस्यों को भी वे इतने सहज ढंग से समझाती थीं कि एक सामान्य व्यक्ति भी

उसे समझकर अपने जीवन में उतार सके। वे न केवल ज्ञान सुनाती थीं, बल्कि उसके अर्थ को जीवन से जोड़कर समझाती थीं।

उनका जीवन इस बात का जीता-जागता उदाहरण था कि एक सच्चा विद्यार्थी वही है जो निरंतर सीखता भी है और सिखाता भी है। मम्मा स्वयं भी निरंतर आत्मचिंतन और योग में लीन रहती थीं। वे प्रातःकाल उठकर तपस्या करती थीं और अपने भीतर की हर कमजोरी को समाप्त करने का पुरुषार्थ करती थीं। इस प्रकार वे एक श्रेष्ठ विद्यार्थी होने के साथ-साथ एक महान शिक्षक भी थीं।

प्रजापिता ब्रह्मा के साथ उनका गहरा संबंध और समर्पण भी उनके जीवन की विशेषता थी। "बाबा का कहना और मम्मा का करना" - यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि उनके जीवन की सच्चाई थी। उन्होंने हर श्रीमंत को पूरी निष्ठा से अपनाया और दूसरों को भी उसी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

मम्मा का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि हर परिस्थिति एक सीख है। चाहे परिस्थितियाँ कैसी

भी हों, उन्होंने कभी अपने लक्ष्य से समझौता नहीं किया। सच्चाई, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ उन्होंने हर चुनौति का सामना किया और दूसरों को भी यही सिखाया कि जीवन में स्थिर रहकर आगे बढ़ना ही सच्ची सफलता है।

उनकी विशेषता यह थी कि वे केवल बोलती नहीं थीं, बल्कि अपने जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करती थीं। वे जो कहती थीं, वही करती थीं, और जो करती थीं, वही सिखाती थीं। इसलिए उनका जीवन एक खुली किताब की तरह था, जिससे हर कोई सीख सकता था।

मम्मा का सम्पूर्ण जीवन सेवाएँ, त्याग और समर्पण का प्रतीक था। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन को पूरी तरह से ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया। वे हर आत्मा के कल्याण के लिए तत्पर रहती थीं और हर किसी को आत्मिक उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती थीं।

आज, जब हम मम्मा के जीवन को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने जीवन को सचमुच एक "जीवंत आध्यात्मिक पाठशाला" बना दिया था। उनका हर कदम, हर शब्द और हर भावना एक गहरी शिक्षा से भरी हुई थी। वे स्वयं भी

ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इतिहास में जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) का जीवन एक अद्भुत मिसाल है। वे केवल ज्ञान सुनाने वाली आत्मा नहीं थीं, बल्कि स्वयं उस ज्ञान की सजीव प्रतिमा थीं। उन्होंने अपने जीवन को इस प्रकार जिया कि हर कदम, हर कर्म और हर वचन एक आध्यात्मिक शिक्षा बन गया। सचमुच उनका सम्पूर्ण जीवन एक 'चलता-फिरता आध्यात्मिक पाठशाला' था, जहाँ वे स्वयं भी सीखती थीं, दूसरों को सिखाती थीं और हर आत्मा को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देती थीं।

एक आदर्श विद्यार्थी थीं और एक

महान गुरु भी। उनके जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि हम भी अपने जीवन को सही दिशा में ढालें, परमात्मा की श्रीमंत पर चलें और अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाएं, तो हमारा जीवन भी एक प्रेरणादायी उदाहरण बन सकता है।

अंततः, मम्मा का जीवन हमें यही संदेश देता है कि सच्ची आध्यात्मिकता वही है, जो हमारे विचारों, वचनों और कर्मों में झलके। जब हम अपने जीवन को एक पाठशाला मानकर हर दिन सीखने और सिखाने का प्रयास करते हैं, तब हमारा जीवन भी सार्थक और सफल बन जाता है।

ऐसी महान जगदम्बा, हमारी प्यारी मम्मा को हृदय से कोटि-कोटि नमन, जिनका जीवन आज भी हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।



रायबरेली-उ.प्र.। नवीन दिव्य भवन निर्माण हेतु भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे राजयोगी ब्र.कु. सूरज, ब्र.कु. गोता, माटेट आबू, कानपुर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. गिरजा दीदी, जिला संचालिका ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. अंजू, बड़गंवा, ब्र.कु. जानकी, तालाब, ब्र.कु. सीमा, कंचाहार, ब्र.कु. आरती, महाराजगंज, ब्र.कु. सरिता, डलमऊ, ब्र.कु. सरोज, कानपुर सिविल लाइन, समाजसेवा भंडार अग्रवाल, पत्रकारिता में प्रदेश अध्यक्ष भगवत प्रसाद, राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ प्रदेश अध्यक्ष शिव शंकर, डॉ. गोता कुमार, डॉ. अनिल, कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सुशी राम तथा अन्य।



जालंधर-आदर्श नगर (पंजाब)। महाशिवरात्रि के पंचम पर्व पर ब्रह्माकुमारीद्वारा द्वारा सिद्ध शक्तिपीठ श्री देवी तालाब मंदिर परिसर में आयोजित पंच दिवसीय '12 ज्योतिर्लिंग दर्शन मेला' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए के.डी. भंडारी, पूर्व सीपीएम, राजेश बिजु, श्री देवी तालाब मंदिर महा सचिव, शैल विजु, श्री देवी तालाब मंदिर अध्यक्ष, राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. उतार दीदी, पंजाब जॉन निदेशिका, राजयोगिनी ब्र.कु. संगीता दीदी, फिरोजपुर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संघीरा तथा अन्य।



चौथला-राज। ज्ञान प्रकाश भवन हॉल के उद्घाटन अवसर पर सुमारे नवसैक पार्टी विधायक भेरू सिंह परिखर, भाजपा विधायक कालुगु मेनवाल, मंडल अध्यक्ष अशोक गायरी, इंदौर क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, उज्जैन, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, इन्दौर, ब्र.कु. गोता तथा अन्य की उपस्थिति रही।



टोंक-राज। ब्रह्माकुमारीद्वारा द्वारा "विश्व शांति, एकता एवं विश्वास के निर्माण में मीडिया की सकारात्मक भूमिका" विषय पर आयोजित मीडिया सेमिनार एवं सम्मान समारोह में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीद्वारा प्रभाग की जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी, जयपुर। साथ मंचासैन हैं जल संसाधन विभाग के अधिशासी अभियंता निरंजन लाल मीणा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्पणा तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।



झारखण्ड-राज। नवनिर्मित ज्ञान अनुभूति सभागृह का उद्घाटन करते हुए इंदौर क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, उज्जैन, राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी, कोटा, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, इन्दौर, ब्र.कु. मधु बहन, राजगढ़, ब्र.कु. निमला दीदी, सर्वाई माधोपुर, ब्र.कु. नेहा एवं अन्य बहन।



कोटा-कुन्हाडी (राज)। वरिष्ठ पत्रकार गजेंद्र व्यास व उनकी टीम ने राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी को उनके समाज एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने हेतु 'हाइवी रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया।



राजगीर-बिहार। नालंदा यूनिवर्सिटी में आयोजित दूसरे दीक्षांत समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुमु से स्नेह भरी मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुपम बहन। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. जवाहर तथा अन्य।



पटना-बिहार। बिहार के राज्यपाल लोफिनेट जनरल सैयद अता हसनैन के साथ जून चर्चा करने के पश्चात् परमात्म स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. रूपम, डॉ. प्रमोद तथा अन्य।



पटना सिटी-पंचवटी कॉलोनी(बिहार)। नवनिर्वाचित नागालैंड राज्यपाल नंदकिशोर यादव को उनके आवास,पटना सिटी पर जाकर ईश्वरीय सौगात भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. रानी।



होशियारपुर-पंजाब। पंजाब के मुख्यमंत्री माननीय भगवंत मान से मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. लक्ष्मी एवं ब्र.कु. रंजिता।



हनुमान-उत्ताखंड। शिव जयंती कार्यक्रम में उत्तराखंड सरकार के भाजपा विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री बंशीधर भगत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलम बहन, सुरेंद्र भुटियाणी एवं पर्यावरण अध्यक्ष विशांशु दत्त कांडपाल।



धुरी-पंजाब। विमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर श्रुगारम्भ करते हुए ब्र.कु. शिवा बहन,बसुन्ना, ब्र.कु. उषा बहन,तथा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मूर्ति बहन, ब्र.कु. डॉ. लेख राम शर्मा,जवाहट कोऑर्डिनेटर पंजाब जोन मैडिकल विंग,तथा, पंजाब के मुख्यमंत्री ओएसडी सुखवीर सिंह, पंजाब लघु उद्योग विकास निगम चेयरमैन टलवीर सिंह दिल्ली, पंजाब वक्क बोर्ड के सदस्य डॉ. अन्वर भन्सोड़, राइसला के डिप्युटी चिज्य गोकल तथा अन्य।

ब्र.कु. शिकारी बहन, जीवन प्राक्शन विशेषज्ञा



हम सभी के संस्कारों को नहीं समझ सकते। जो संस्कार मेरे पास नहीं होगा, मैं उसे कभी समझ नहीं सकती। तो हमें समस्या ये होती है कि आप ऐसा कैसे कर सकते हो, यह मैं समझ नहीं पाता। जबकि समझने से अच्छा है कि हम स्वीकार कर लें कि उनका संस्कार अलग है। समझना मतलब मैं आपके संस्कारों को अनुभूत करूँ। इस समझना शब्द को हटाएँ और उसको स्वीकार से बदल दें। हम आहत होते हैं रिश्तों में। किसी ने कुछ ऐसा किया, कुछ करा, जो मेरे अनुसार नहीं था तो मैंने मन में चोट निर्मित कर ली - यू हर्ट मी। हम सभी के पास एक नाम है, जिसने आपको आहत किया था कभी। अब पता करते हैं किसने हमें हर्ट किया। जैसे मैं बोल रही हूँ और कोई उठकर बाहर चला जाए। मैंने अपेक्षा की थी कि कोई बीच में

से उठकर नहीं जाएगा। अगर कोई उठकर जाता है तो उनके पास उसके लिए कोई न कोई कारण होगा। लेकिन मैंने सोच बना ली कि उन्होंने मेरा अपमान किया। हम चीजों को इसी तरह से रिकॉर्ड करते हैं मन में। फिर हम कहते हैं कि इसने मेरा तिरस्कार किया, उसने मेरी अवमानना की। जबकि लोग सिर्फ वही कर रहे हैं जो उनको सही लगता है। उसके

देखें। आपने सुबह नाश्ते में कुछ बहुत अच्छी चीज बनाई। आप छह बजे से मेहनत कर रही थीं। पतिदेव आये। डायनिंग टेबल पर बैठे। एक हाथ में फोन, एक हाथ में पेपर। कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं दी। आपने पूछा, कैसा है खाना? तो उन्होंने कह दिया, अच्छा है, लेकिन मेरी मम्मी जितना अच्छा नहीं बना। अब वो तो यह बात बोलकर चले गए। लेकिन आपके

अपना सुख-दुःख कोई और नहीं, हम ही रचते हैं...

लिए उनके पास कारण है। लेकिन क्योंकि उनका कर्म हमें सही नहीं लगता, इसलिए हमने मन में रिकॉर्ड कर दिया कि उन्होंने मेरा अपमान किया। लोगों के जो संस्कार हैं, उसके अनुसार वो कर रहे हैं। लेकिन उनको देखते हुए हम अपने मन में क्या रिकॉर्ड करते हैं, वो हमारा चयन है। मान लें कि किसी को देखकर मैंने अपने मन पर यह दर्ज कर लिया कि उन्होंने मेरा अपमान किया। किसी दूसरे अवसर पर उन्हें देखा तो मेरी धारणा पहले ही बनी हुई थी। तो मैंने फिर से यह विचार रच दिया कि यह व्यक्ति मेरा अपमान करता है। तब यह विचार मेरा संस्कार बनता चला जाता है। हमें बहुत ही सचेत रहना चाहिए कि हम मन में क्या दर्ज कर रहे हैं। एक और उदाहरण

मन के अन्दर अब शुरू हो गया - मैं सुबह छह बजे उठी, रात को नाइट ड्यूटी करके आई, इनके लिए इतना बनाया। इस घर में तो मेरी कोई वैल्यू ही नहीं है। कितनी भी मेहनत कर लो ये सुनने को मिलता है ऊपर से। कोई फायदा ही नहीं है इनके साथ। ये सारी बातें कौन बोल रहा है? आपका मन ही ना? उन्होंने एक लाइन बोली थी, आपने कितनी लाइन बोल दीं। फिर मन इतना भारी हो गया तो मम्मी को फोन किया, बहन को फोन किया, फ्रेंड को फोन किया, और सबको पूरी कथा सुनाई। ये सारा कुछ करके अपने मन का दर्द ही और बढ़ाया। चोट किसने रची थी? और चोट को ठीक करने के बजाय उलटें उसी को कौन बढ़ाते रहा? साक्षी होकर इस बात पर विचार कीजिएगा।



दिल्ली-हरिनगर। 'विश्व बंधुत्व का आधार-विश्वास एवं एकता' विषय पर आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन करते हुए ज्ञानी जितेन्द्र सिंह,शंभू गुरु दाग,जनकपुरी, आचार्य विक्रम मुनी, पीडित,बड़ हनुमान मंदिर कर्नाट प्लेस,दिल्ली, महामंडलेश्वर हरि ओम, गुरुदास बाल साहिब के हेड शंभू सरदार सुखविंदर सिंह, मीडिया विंग के राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. सुशील, राजयोगिनी ब्र.कु. अमरुंडा देवी एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. शुक्ला देवी।



रामपतीपुर-बिहार। 90वीं विमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए किशोरा जय दशरथ मिश्र। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. रानी देवी, टाटा एअरसी के क्लस्टर हेड पंकज कुमार, सुधा देवरी डिप्टी मैनेजर अस्तोष, प्रमुख व्यवसायी सतीश चौधरी एवं ब्र.कु. मयंक।



तिरुची-कोकिल चटिका(राज.)। ब्रह्मकुमारीज नवनिर्मित 'शिक्षण' सेवाकेन्द्र का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू देवी,मडेंट अन्नू, जयपुर राज्याके उपदेशीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम देवी, जोधपुर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. फूल देवी एवं ब्र.कु. शीलू देवी, आध्यात्मिक गणिका कुमारी हंसी, तर्जोनिधि पंचवत अन्नद अखंड के श्री महंत नारायणजी जी महाराज, ओमिया विद्यालय श्री भैरवम सिखोल तथा अन्य।



ओआरसी-गुरुग्राम(हरियाणा)। ओआरसी में आयोजित स्वर मंजरी अहिंदी स्टूडियो का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए ओआरसी निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अशा देवी, ओआरसी व हरिनगर उपदेशीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला देवी। मंच पर उपस्थित रहे दिल्ली शांति नगर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रवर्ती देवी, राजयोगिनी ब्र.कु. अमरुंडा देवी, सुप्रसिद्ध कवयित्री कटक डॉ. संगीता शंकर एवं संस्थान के वरिष्ठ ब्र.कु. भाई-बहानें।



दिल्ली-नांगलोड़। अथापक नगर के हित ज्योति भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर श्रुगारम्भ करने के पश्चात् चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम देवी,डॉ.ब्रह्मकुमारी बहन, बखाना बीजेपी प्रधारी रज्जुराज गहलौत, पूर्ण फास्ट डॉ. चांदेरीय राणी तथा अन्य।



अलीगढ़-सुखीपुरी(उ.प्र.)। 90वीं विमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान डॉ. नितिका गर्ग,शिवम केयर हॉस्पिटल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं बाल एवं हास्य कवि प्रेम किशोर पट्टाखा एवं एडवोकेट व मिलित बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सुशील कुमार वाणीय।

ओमशान्ति मीडिया

ओमशान्ति मीडिया

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशेषांक

शरीर और मन की वास्तविक यात्रा का विज्ञान-योग

हम सभी की जिंदगी कैसी है, क्या है, और किस दिशा में जा रही है - यह लगभग हर व्यक्ति जानता है। फिर भी जीवन में निरंतर उतार चढ़ाव, अनेक घटनाएँ, किस्से और अनुभव आते रहते हैं। हम उन्हें स्वीकार भी करते हैं और समय के अनुसार काम भी करते रहते हैं।

शरीर एक अद्भुत यंत्र है, जिसकी अपनी एक कार्यप्रणाली (मैकेनिज्म) है। इस शरीर को संतुलित और व्यवस्थित रखने के लिए हम योगासन का सहारा लेते हैं। जब हम योगासन करते हैं, तो हमें लगता है कि हमने कुछ विशेष किया है, शरीर हल्का और स्वस्थ महसूस होता है। लेकिन कुछ समय बाद फिर वही स्थिति आ जाती है। प्रश्न उठता है - ऐसी अवस्था से बाहर कैसे निकलता जाए?

प्रश्न अनेक है, लेकिन उत्तर एक है, मिलान।
मार्ग अनेक है, लेकिन रोशनी एक ही है।

यदि हम अपने जीवन को ध्यान से देखें, तो पाएंगे कि जीवन का एक बड़ा हिस्सा केवल शरीर के निर्वाह में बीत जाता है। बचपन में हम स्वतंत्र होते हैं, शरीर की ओर अधिक ध्यान नहीं देते। खेलकूद और सक्रियता के कारण शरीर स्वतः स्वस्थ रहता है। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, जिम्मेदारियाँ बढ़ती हैं और हम अपने शरीर तथा मन की अनदेखी करने लगते हैं।

जब शरीर में समस्याएं आती हैं, तो हमें सलाह दी जाती है - योगासन करें, प्राणायाम करें। हम यह सब शुरू भी करते हैं, लेकिन कुछ समय बाद उसका प्रभाव कम होने लगता है। इसका कारण क्या है?

कारण यह है कि आसन करने वाला और उसे संचालित करने वाला अलग-अलग है। जैसे एक कार स्वयं नहीं चल सकती - उसे चलाने के लिए एक चालक (ड्राइवर) आवश्यक होता है। उसी प्रकार यह शरीर एक यंत्र है और उसका चालक है - आत्मा। यदि यह चालक शक्तिशाली नहीं है, तो शरीर का तंत्र ढंग से कार्य नहीं कर सकता।

इसलिए यह समझना आवश्यक है कि केवल शारीरिक योग पर्याप्त नहीं है। राजयोग हमें यह सिखाता है कि जैसे हम बाहरी उपकरणों - बिजली, पंखा, लाइट आदि का उपयोग करना सीखते हैं वैसे ही हमें अपने मन और संकल्पों को भी समझना और नियंत्रित करना चाहिए। हमारे भीतर जो विचार और संकल्प उत्पन्न होते हैं वही हमारे शरीर को संचालित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप पार्क में योगासन कर रहे हैं और अचानक घर से कोई आपातकालीन समाचार मिल जाए, जैसे किसी को हार्ट अटैक आ गया, तो तुरंत आपकी सारी

शारीरिक स्थिति बदल जाती है। आपकी ऊर्जा का प्रवाह बदल जाता है और मन पूरी तरह उस परिस्थिति में लग जाता है।

इससे स्पष्ट होता है कि शरीर को नियंत्रित करने वाली मुख्य शक्ति मन और आत्मा है। जब हम इंद्रियों को नियंत्रित कर लेते हैं तो हमारा शारीरिक तंत्र स्वतः नियंत्रित हो जाता है। तब हम जिस समय जो करना चाहें, उसे सहज रूप से कर सकते हैं। यह अवस्था अत्यंत श्रेष्ठ है।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम मशीन की तरह कार्य करते हैं लेकिन हमारे विचार निरंतर चलते रहते हैं। इसलिए योग गुरु भी कहते हैं कि जब आप योगासन करें, तो पूर्ण जागरूकता के साथ करें - ध्यान दें कि पैर कैसे हैं, हाथ कैसे हैं, शरीर की स्थिति कैसी है। लेकिन यह जागरूकता तभी संभव है जब मन शांत और नियंत्रित हो।

यदि मन भय, चिंता, दुःख, पीड़ा या तनाव से भरा हुआ है तो वह एक अस्वस्थ ड्राइवर की तरह है जो गाड़ी को सही दिशा में नहीं चला सकता। इसलिए सबसे पहले मन का स्वस्थ होना आवश्यक है। राजयोग मन को स्वस्थ बनाता है। यह मन की उलझनों को समाप्त करता है और भीतर शांति एवं शक्ति भरता है। जब

मन संतुलित होता है, तब शारीरिक योग का वास्तविक लाभ मिलता है।

इसलिए अब समय है जागने का -

सबसे पहले स्वयं को जानने का कि मैं इस शरीर को चलाने वाली शक्ति आत्मा हूँ। जब आत्मा स्वयं को पहचानती है और परमात्मा से जुड़ती है तब उसे एक दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। उस शक्ति के साथ किया

हम सभी मिलकर शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं



हर मनुष्य चाहता है कि दूसरे पर विश्वास करें, लेकिन विश्वास वही टिकता है जहाँ मन शांत, विचार स्वस्थ और भावनाएँ शुद्ध हों। जब हम कुछ क्षण रुककर स्वयं से संवाद करते हैं तो इस बात का

अनुभव होता है कि शांति और आनंद किसी बाहरी वस्तु में नहीं बल्कि हमारे भीतर है। जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज होता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है। सशक्त आत्मा ही विश्व एकता की संकल्पना को साकार करने की आधारशिला है। आइए शांति को अपने भीतर जगाएँ, विश्वास को अपने विचारों में उतारें और एकता को अपने कर्मों में प्रकट करें। हम सब मिलकर एक बेहतर, शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

यतमहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, भारत।

सम्पूर्ण स्वास्थ्य का अमृत है - योग

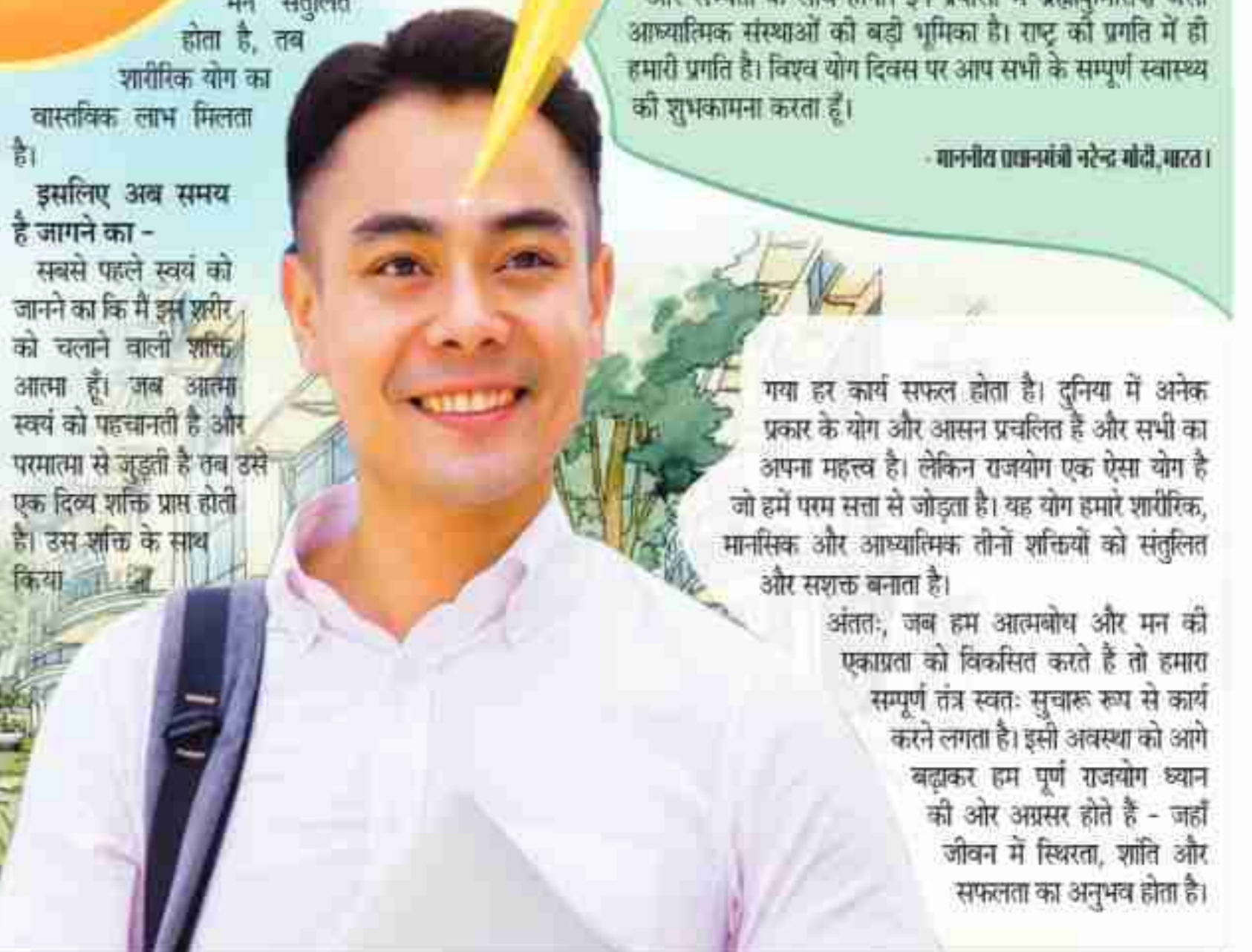


अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान-योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूँ ब्रह्माकुमारीज का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज परिवार का अभिनेता बन रहा हूँ। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। विश्व योग दिवस पर आप सभी के सम्पूर्ण स्वास्थ्य की शुभकामना करता हूँ।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत।

गया हर कार्य सफल होता है। दुनिया में अनेक प्रकार के योग और आसन प्रचलित हैं और सभी का अपना महत्व है। लेकिन राजयोग एक ऐसा योग है जो हमें परम सत्ता से जोड़ता है। यह योग हमारे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों शक्तियों को संतुलित और सशक्त बनाता है।

अंततः, जब हम आत्मबोध और मन की एकाग्रता को विकसित करते हैं तो हमारा सम्पूर्ण तंत्र स्वतः सुचारू रूप से कार्य करने लगता है। इसी अवस्था को आगे बढ़ाकर हम पूर्ण राजयोग ध्यान की ओर अग्रसर होते हैं - जहाँ जीवन में स्थिरता, शांति और सफलता का अनुभव होता है।





दुनिया की सर्व समस्या का एक समाधान और उसका आधार राजयोग और उसकी पद्धति है। उसके अन्दर जो कुछ भी है- चाहे वो शरीर से सम्बन्धित है, चाहे वो मानसिक है, चाहे आध्यात्मिक है, चाहे आर्थिक है, उन सारी स्थितियों को एक सूत्र में पिरोता है राजयोग। और ये राजयोग आज का नहीं है, प्राचीन है। जिसको ऋषि, मुनि, तपस्वी सबने सराहा है। इस आधार को आधार बनाकर हम सभी भी अपने आप को उन स्थितियों से पार ले जा सकते हैं, जो हमें हर पल, हर क्षण छेड़ती हैं, परेशान करती हैं। तो क्यों न हम इसको अपनाकर अपनी दिनचर्या में उन सारे कर्मों को एक सही दिशा दे पायें, दें, जो हमें सफलता दिलाए, जो हमें आगे बढ़ाए, हमारे से औरों को आगे बढ़ाए, हमसे सबको दुआएं मिले। ऐसी स्थिति में आकर ही हम सबको वो सब दे सकते हैं, जो हम चाहते हैं।

राजयोग का योगाभ्यास

योगाभ्यास वास्तव में वह शक्ति है जो हमारी संभावनाओं को वास्तविकता में बदल देता है। मनुष्य के भीतर परमात्मा ने सभी शक्तियां समान रूप से प्रदान की हैं। ऐसा नहीं है कि किसी को अधिक और किसी को कम मिला है - हर मानव को यह दिव्य सामर्थ्य प्राप्त है। लेकिन अंतर यहाँ आता है कि कौन उस शक्ति का सही लालन-पालन करना जानता है, कौन उसे विकसित करने का प्रयास करता है। परमात्मा ने हर जीवन के भीतर एक सहज प्रेरणा, एक ऊंचा उठने की इच्छा शक्ति रखी है। यही इच्छा हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

योग उस वातावरण को तैयार करने का माध्यम है, जिसमें हमारी यह सुप्त शक्तियां जागृत होती हैं। जिनके पास ज्ञान और अनुभव का अभाव है, उन्हें यह संदेह हो सकता है कि क्या योग के माध्यम से इतना परिवर्तन संभव है? लेकिन जो बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया को समझता है, उसके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जब एक छोटा-सा बीज विशाल वटवृक्ष बन सकता है, तो मनुष्य भी अपने साधारण

स्वरूप से उठकर "नर से नारायण" की अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

राजयोग इसी अनंत संभावनाओं का द्वार खोलता है। राजयोग का अर्थ है- अपने भीतर उस श्रेष्ठ बीज को पहचानना, जो हमारे जीवन रूपी वृक्ष को महान बना सकता है। इसका अर्थ यह भी है कि मेरे भीतर सृजन करने की, अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार दिशा देने की पूर्ण योग्यता है।

इन अनंत संभावनाओं को पहचानने और उन्हें साकार करने के लिए हमें अपने भीतर छिपी हुई सुषुप्त शक्तियों को जागृत करना होगा। योगाभ्यास हमें यही सिखाता है अपने आप को जानना, अपनी शक्ति को पहचानना और उसे सही दिशा में प्रयोग करना।

योग द्वारा मन पर नियंत्रण - योग का सच्चा फल

योग सभी के व्यक्तित्व विकास और समाज के समाज विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मानव और प्रकृति के बीच सद्भावना स्थापित करने का माध्यम है और लोगों को स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग हमारे जीवन को पूरी तरह से बदलने की क्षमता रखता है - यदि हम इसे सही विधि और समझ के साथ अपनाएं। हममें से हर व्यक्ति जीवन को पूर्ण रूप से, जी भरकर जीना चाहता है और योग उसी कला की जड़-बूटी है। योग का सम्पूर्ण लाभ लेने के लिए हमें इसे गहराई से समझना होगा। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि योगी कौन होता है।

योगी वह व्यक्ति होता है जिसमें स्वयं के लिए दूसरों के लिए और प्रकृति के लिए सद्भावना होती है। योग हमारी

इंद्रियों को नियंत्रित करता है और देह भान को परिवर्तित करता है, जिससे यह अनुभूति होने लगती है कि यह शरीर केवल एक साधन है - परमशक्ति का अनुभव करने का माध्यम है।

योग में इतनी शक्ति है कि वह पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बांध सकता है। कई लोग योग को केवल एक व्यवस्था के रूप में देखते हैं लेकिन वास्तव में योग कोई व्यवस्था नहीं, बल्कि एक अवस्था है। योग कोई संस्था नहीं, बल्कि आस्था है। जब तक हम इसे इस रूप में नहीं समझते, तब तक हम इसे टुकड़ों में ही देखते हैं और इसकी पूर्णता को पहचान नहीं पाते।

एक सच्चा योगी बनने के लिए हमें इस देह रूपी साधन से ऊपर उठकर अपने भीतर के सत्य को पहचानना होगा। परमशक्ति के साथ जुड़कर, आंतरिक शक्ति का अनुभव करते हुए हमें यह समझना होगा कि हमारी वास्तविक पहचान यह शरीर नहीं बल्कि एक शुद्ध, सच्ची आत्मा है। यह शरीर केवल एक माध्यम है, जिसके द्वारा हमें जीवन जीना है।

जब जीवन पर हमारा नियंत्रण स्थापित होता है तब हम वास्तविक अर्थों में योग को प्राप्त करते हैं और यही योग का सच्चा फल है।

योग और राजयोग का संतुलन स्वस्थ जीवन का आधार

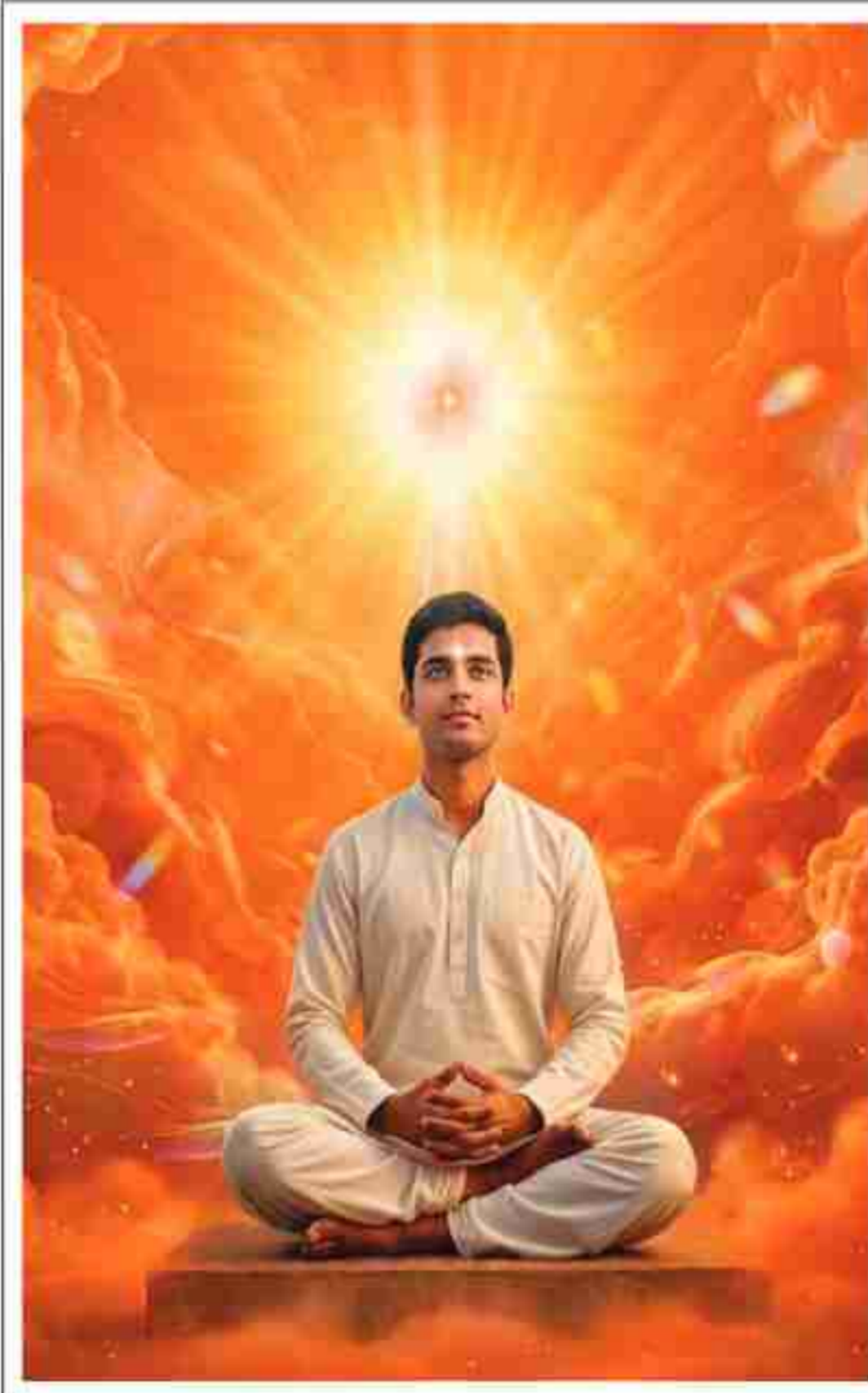
आज के समय में लोग अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हैं जैसे डायबिटीज, हाइपरटेंशन आदि। इन बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए लोग लगातार उपाय खोजते रहते हैं, लेकिन उपचार के बजाए ये बीमारियां धीरे-धीरे लाइलाज रूप लेती जा रही हैं। इसका एक प्रमुख कारण बढ़ता हुआ तनाव है, जिसे आज की युवा पीढ़ी सही तरीके से संभाल नहीं पा रही। परिणामस्वरूप वे शराब और ड्रग्स जैसे हानिकारक साधनों का सहारा लेने लगते हैं।

ऐसी स्थिति में एक ही सशक्त उपाय सामने आता है - योगाभ्यास। योग ही हमारी मानसिक स्थिति को संतुलित बनाए रखने में सक्षम है। यदि हम शरीर को मन और बुद्धि का मंदिर मानें, तो योग उस मंदिर को सुंदर, सशक्त और पवित्र बनाता है। योग तभी पूर्ण रूप से लाभकारी होता है जब उसे सही विधि और अनुशासन के साथ किया जाए। यह न केवल हमारी शारीरिक और मानसिक क्षमता को बढ़ाता है बल्कि हमारी आंतरिक विशेषताओं का विकास करता है और हमें तनावमुक्त जीवन जीने की दिशा में अग्रसर करता है।

योग को समझने के लिए 'साधन' और 'साध्य' के अंतर को जानना आवश्यक है। हमारा शरीर साधन है, जबकि मन और बुद्धि साध्य हैं। मन और बुद्धि के बीच जो द्वंद्व चलता है - मन कुछ और

चाहता है और बुद्धि कुछ और निर्णय लेती है - यही असंतुलन हमारे जीवन में अनेक समस्याओं का कारण बनता है। इस असंतुलन के कारण शरीर में रासायनिक पदार्थों का प्रभावित होती है जिससे बीपी, डायबिटीज और अन्य विकृतियां उत्पन्न होती हैं। वास्तव में, यह असंतुलन मन और बुद्धि के बीच तालमेल के अभाव और परिस्थितियों के प्रभाव में लंबे समय तक जीने की आदत के कारण उत्पन्न होता है। हम अपनी वास्तविक पहचान से दूर हो जाते हैं और बाहरी वातावरण के प्रभाव में आकर अपने जीवन का संतुलन खो देते हैं।

इसलिए योग का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। यह हमें शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर सशक्त बनाता है। यदि हम स्वस्थ, संतुलित और सम्पूर्ण जीवन जीना चाहते हैं, तो योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना ही होगा। यही हमें वास्तविक स्वास्थ्य और आत्मिक संतुलन की ओर ले जाता है।



योग का वास्तविक परिणाम यह है कि हमारी सोच और हमारे कर्मों में शुद्धता आने लगती है। जब योग हमारे जीवन में गहराई से उतरता है, तो कर्मों से लालच, हिंसा और नकारात्मक भावनाएं स्वतः समाप्त होने लगती हैं। इसके साथ ही हमें न केवल उत्तम स्वास्थ्य का लाभ मिलता है, बल्कि सामाजिक सहयोग और सामंजस्य की भी प्राप्ति होती है। एक स्वस्थ शरीर और अनुशासित बुद्धि ही भयमुक्त विश्व की मजबूत नींव हैं।

निरंतर संघर्ष चलता रहता है। लेकिन सबसे बड़ी विफलता यह है कि हम एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में असमर्थ रहे हैं। और यह तब तक संभव भी नहीं है जब तक हम स्वयं को नहीं समझते।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक राजयोग में कहा है कि प्रत्येक आत्मा का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और उसमें यह सामर्थ्य है कि वह प्रकृति को नियंत्रित कर अपनी आंतरिक और बाह्य शक्तियों को प्रकट कर सके।

राजयोग भयमुक्त, संतुलित और समृद्धि जीवन कुंजी

योग के माध्यम से जब हम स्वयं को नया बनाते हैं, तभी हम विश्व को भी नया बना सकते हैं। आज का विश्व आर्थिक आधार पर विभाजित हो चुका है, जहाँ भौतिकता के कारण

उन्होंने यह भी संदेश दिया कि अपने कर्म और साधना के माध्यम से इसे अनुभव करो, लेकिन अपनी विचाराधारा को दूसरों पर थोपने का प्रयास मत करो। स्वयं स्वतंत्र रहो और दूसरों को भी स्वतंत्र रहने दो - यही सच्चा धर्म और जीवन का कर्तव्य है। योग किसी व्यापार या प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक अवस्था है। जब हम आर्थिक आधार पर जटिल बातों के रूप में देखते हैं तो हमें यह कठिन लगने लगता है और हमारा विश्वास डगमगाने लगता है। लेकिन यदि हम इसे छोटे-छोटे सरल कदमों में समझें तो महसूस होता है कि यह तो हम भी कर सकते हैं, यह मार्ग हमारे लिए भी संभव है।

योग न तो कोई व्यवस्था है और न ही किसी की निजी सम्पत्ति है। यह एक अवस्था है, जो सम्पूर्ण मानव जाति की धरोहर है। यह केवल इस युग के लिए नहीं, बल्कि अनेक युगों के लिए मानव जीवन को श्रेष्ठ और सम्पूर्ण बनाने का साधन है। योग के माध्यम से हम शारीरिक और मानसिक स्तर पर सशक्त बनते हैं और जीवन के वास्तविक आनंद का अनुभव करते हैं।

योग दिवस पर विशेष : राजयोग से आंतरिक शांति की ओर

राजयोग - मन पर स्वराज्य का सहज मार्ग

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि स्वस्थ और संतुलित जीवन के लिए योग अत्यंत आवश्यक है। परंतु योग का वास्तविक अर्थ केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित नहीं है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग हमें आत्मचेतना, मन की स्थिरता और परमात्मा से जुड़ने का अनुभव कराता है। आज के तनावपूर्ण और व्यस्त जीवन में राजयोग एक ऐसी विधि है जो हमें भीतर से सशक्त बनाकर सच्ची शांति और संतुलन प्रदान करती है।

आज जब पूरा विश्व योग दिवस बना रहा है, तब यह समझना आवश्यक है कि योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग हमें बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन की ओर ले जाता है।

राजयोग का अर्थ : मन और इंद्रियों पर स्वयं का स्वराज्य स्थापित करना। आज मनुष्य बाहरी उपलब्धियों में तो अग्रे बढ़ रहा है लेकिन भीतर से अस्थिर और तनावग्रस्त होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण है : मन पर नियंत्रण का अभाव। राजयोग हमें सिखाता है कि हम अपने विचारों के स्वामी बनें,



न कि उनके द्वारा। जब हम राजयोग ध्यान का अभ्यास करते हैं तो हम स्वयं को आत्मा रूप में अनुभव करते हैं - शांत, पवित्र और शक्तिशाली।

यह अनुभव हमें परमात्मा से जोड़ता है जो शांति और शक्ति का असीम स्रोत है। इस जुड़ने से मन में सकारात्मकता, स्थिरता और स्पष्टता आती है।

आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में, जहाँ हर पल सूचनाओं का दबाव है, वहाँ मन को शांत और केंद्रित रखना एक चुनौति बन गया है। ऐसे समय में राजयोग एक सरल और प्रभावी उपाय प्रदान करता है। यह हमें सिखाता है कि कैसे अनावश्यक विचारों को रोककर, अपने मन को सकारात्मक दिशा दी जाए।

योग दिवस केवल एक दिन का उत्सव न बनकर, यदि हम इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लें, तो वास्तविक परिवर्तन संभव है। प्रतिदिन कुछ समय राजयोग के लिए निकालना, हमारे मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अंततः, राजयोग हमें यह संदेश देता है कि सच्चा सुख और शांति बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर ही विद्यमान है। आवश्यकता है उसे पहचानने और अनुभव करने की। यही योग का वास्तविक उद्देश्य है - स्वयं से जुड़कर, परमात्मा से जुड़ना और जीवन को श्रेष्ठ बनाना।

राजयोग परमात्मा से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध का नाम है



आप देखें

शक्ति से लेकर अभी तक की जो सब मनुष्य की स्थिति है या मानव का परमात्मा के प्रति भाव है, उसकी अलग-अलग सीमाएँ तय की गईं। जैसे शक्ति में कहा जाता है कि भगवान भाव का भूखा होता है, न कि भोजन का भूखा है, फल-फूल या जल का भूखा है। वो केवल भाव का भूखा कहा जाता है। लेकिन इस बात को समझने वाले कितने हैं? बहुत थोड़े। लेकिन जो समझते हैं और उसको अपने जीवन में अपनाते हैं उनकी भी संख्या बहुत ज्यादा नहीं है। परमात्मा को समझने का आधार क्या हो सकता है? जैसे आप देखें इस दुनिया में जो स्थूल चीजें हैं - घर, गाड़ी, मकान, पैसा, इसमें हम सबके अपने संकल्प भी हैं, हमारा खुद का भाव भी है। और जो भी हमारे संकल्पों में होती है, सोच में होती है वो थोड़े दिन में हमारे पास अपने आप ही रेवेल होके आ जाती है, प्रत्यक्ष हो जाती है। लेकिन जब भी हम परमात्मा से जुड़ते हैं, दुनिया में भी कहते हैं कि कोई न कोई दुःख, तकलीफ, दर्द जब होता है तब जुड़ते हैं। मनुष्य की एक स्थिति है, जब उसका सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो कुछ भी नहीं सुनना चाहता, और जब सब कुछ खराब हो जाता है तो उस समय उसके पास ताकत नहीं होती कि वो कुछ भी सुन सके गहरी बात, ज्ञान की बात। तो सुनेगा कब, जब सब ठीक हो।

तो ज्यादातर जब दुःख और तकलीफ की स्थिति होती है उस समय लोग परमात्मा के पास जाते तो हैं और मिलते भी हैं, जुड़ते हैं लेकिन प्राप्ति के लिए, प्रेम के लिए नहीं। तो जहाँ पर प्राप्ति है, प्राप्ति का भाव है, प्राप्ति करने

की स्थिति है वहाँ प्रेम हो ही नहीं सकता। तो परमात्मा कहते हैं कि ये सारी चीजें तो आपको आपके संकल्पों से ही मिल जाएंगी। आप मेरे पास केवल प्रेमपूर्ण बात करने के लिए बैठें। मेरे से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बनाओ। दुनिया में व्यक्ति धनी तब माना जाता है जब दुनिया में उसके सारे सम्बन्ध बहुत अच्छे हों। कहते हैं जब कोई व्यक्ति बीमार है और उसके सारे सम्बन्धों उसको सपोर्ट करते हैं तो उसको बीमारी में भी सुख मिलता है। ऐसे ही परमात्मा कहते हैं कि तुम मेरे से प्रेमपूर्ण रूप से जुड़ते हो, केवल मेरे से महसूस करते हो, बिना कुछ मांगे, बिना कुछ इधर-उधर की बातें किए, बिना दुःख सुनाए, हम परमात्मा के साथ बैठकर बात कर सकते हैं।

आप देखेंगे कि आज भी जब हम परमात्मा के साथ योग लगाने बैठते हैं तो बहुत सारी बातें दुःख की, तकलीफ की, दर्द की स्थिति बयां करते हैं, हम सारा टाइम उन बातों में निकाल देते हैं, तो फिर भगवान से हमने क्या बातचीत की? तो परमात्मा ने राजयोग की स्थिति इसी को बताई कि जब आत्मा यहाँ के सारे देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थों की बातें भूलकर मेरे से मैं जो हूँ, जैसा हूँ उस रूप से मिलती है। केवल एक भाव से, केवल एक एहसास से उसको कोई नाम नहीं देती है, केवल मिलती है, केवल प्रेम करती है। उससे जो प्राप्ति होती है वो सुकून वाली होती है, शांति वाली होती है। और उससे जो अपनापन मिलता है उससे लगता है कि हम भी इस दुनिया में हैं तो जरूर, लेकिन एक केवल भूमिका निभाने के लिए। तो इस प्रेमपूर्ण सम्बन्ध की गहराई समझने के लिए सबसे पहले जो भी इसको जानना चाहता है, करना चाहता है, पृष्ठना चाहता है, बताना चाहता है, वो इसको करे। इसको इस भाव से भी देखा जाता

है कि जब इसको हम करना शुरू करेंगे तो एक दिन में कोई चीज हमको नहीं मिल जाएगी, एक दिन में कोई प्राप्ति नहीं हो जाएगी। लेकिन वो प्राप्ति जो इस समय होगी वो भाव वाली होगी, उस प्राप्ति में सुख बहुत होगा।

कहने का मतलब है - परमात्मा से प्रेम का अर्थ ये है कि हम सभी जिन गुणों और जिन शक्तियों से बने होते हैं ना, हम उसी की पूरी जीवन तलाश करते हैं। हम बने हैं ज्ञान से, पवित्रता से, शांति से, सुख से, प्रेम से, आनंद से और हल्की चीजों की तलाश हम स्थूल चीजों में कर रहे हैं और इन्हीं की प्राप्ति के लिए हम भगवान से भी जुड़ रहे हैं। तो ये तो न्याय नहीं हुआ ना! इसीलिए परमात्मा कहते हैं तुम मनुष्यों को अतीन्द्रिय सुख या फिर भगवान के साथ परम सुख प्राप्त करना है तो उसके लिए कोई प्राप्ति की बात नहीं करो, केवल जुड़ो, केवल अनुभव करो और आपको अपने संकल्पों से वैसे ही सबकुछ मिल जाना है। इस आधार से जो सम्बन्ध बनेगा उससे हमारी हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस नैचुरल

होगी, और हमारे कोई भी कमी महसूस नहीं होगी। परमात्मा से इस सम्बन्ध को बढ़ाएँ और अपने आपको जोड़ कर दिखाएँ, इसी को राजयोग कहेंगे।

कुछ इनके भी नजरिये परमात्मा के बारे में...

परमात्मा से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध है योग



हम एक परमात्मा, एक विश्व परिवार की संकल्पना से चलते हैं। इस संकल्पना को साकार रूप देने का माध्यम परमात्मा द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग ही है। इसी से ही हम उस अवस्था को पुनः प्राप्त कर पायेंगे। भारत देश पुनः देवभूमि बनेगा जहाँ सुख, शान्ति व सम्पत्ति के अखंड भंडार होंगे, जब सब इसी संकल्पना को लेकर चलेंगे। ऐसा मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि जो कुछ भी आज मैंने पाया है वो परमात्मा द्वारा सिखाए गये राजयोग के आधार से ही है। हमारा संकल्प है कि पूरा विश्व इस राजयोग के सूत्र में बंधे तबकि हम एक स्वर्णिम दुनिया को संकल्पना को साकार कर सकें।

- राजयोगीनी ब.भू. मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

आपने मन को जीतना ही सफलता का प्रथम सूत्र है



राजयोग, विरम्यना और तपस्या जैसी समृद्ध आध्यात्मिक परंपराएँ आज भारत को विश्व गुरु बना रही हैं। यही आध्यात्मिक शक्ति राष्ट्र का मार्गदर्शन कर रही है। ध्यान, आत्मा, मन और शरीर को गहन शांति प्रदान करता है। ध्यान की अवस्था में सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं और आंतरिक ऊर्जा का संचार होता है। मन को जीतना ही सफलता का प्रथम सूत्र है, यही गीता का संदेश है।

- सीपी राधाकृष्णन, उपराष्ट्रपति

तब का ज्ञान आज भी हमें नई ऊर्जा दे रहा है



ब्रह्माकुमारीज संस्था विश्व की सबसे बड़ी बालों द्वारा संचालित आध्यात्मिक संस्था है, जो भारत की प्राचीन अज्हात एवं योग परंपरा को पूरे विश्व में प्रसारित कर रही है। यह संस्था शारीरिक रूपों की तुलना में मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर अधिक प्रभावों रूप से कार्य करती है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग विज्ञान, अशांति, तनाव एवं अवसाद जैसे नकारात्मक मानसिक स्थितियों को समाप्त कर मानव जीवन को ब्रह्म, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है।

- ओम विमला, अध्यक्ष, लोकसभा

राजयोग ने जगाई है विश्व में नई चेतना



संज्ञा और सांसारपीएम लोकर सभी राज्यों की पुलिस भी कब्जुनू और व्यवस्था की स्थिति संभालकर संरक्षण देने का काम करती है। परंतु यह काम एक प्रकार से डेर खरा तनाव पैदा करने वाला है। नौद को कमी, पानी की कमी, शांत मन को कमी और हिंसा से जुड़ने के समय उनका मन तनाव में होता है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज द्वारा हमारे सुरक्षा कार्यों को बाहर लाकर उनका मन, आत्मा और शरीर को शांति का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करना, अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है। मैं इसके लिए ब्रह्माकुमारीज को बहुत-बहुत सन्तुष्टि देना चाहता हूँ।

- अमित शाह, गृह मंत्री, भारत सरकार

ब्रह्माकुमारीज ने मिस्टरियस भाव से मानवता के लिए कार्य किया



ब्रह्माकुमारीज ने राजयोग संस्था के माध्यम से ऊर्जा को लोगों को फैलाया है। यह मैं सहज अनुभव कर सकता हूँ। यहाँ अदभुत वातावरण है। यहाँ कहीं मंदिर नहीं है, गिरिजाघर, मस्जिद नहीं है। लेकिन फिर भी गजब के वातावरण है। यहाँ आध्यात्मिक तरीके से शांति है। यहाँ आज हर कोई अंधकार शून्य हो जाता है। ब्रह्माकुमारीज ने निःस्वार्थ भाव से पूरी मानवता के आध्यात्मिक विकास और आंतरिक बल बढ़ाने के लिए कार्य किया है।

- राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री, भारत सरकार



कुछ इतके भी नकारिये परमात्मा के बारे में...

ब्रह्माकुमारीज विराट प्रयास है

ब्रह्माकुमारीज शील और चरित्र जगते हैं। और चरित्र जगाने का आधार है - शरीर-मन-बुद्धि के परे जाकर अपने अंतर की यात्रा करना। संग भी कहता है कि बनना है तो अंदर से बनने। चरित्र के अंदर शील होता है। हम आत्म में परस्पर सहयोगी होकर चलें, परस्पर बाधक न बनें। मैं बहुत जल्द माइंट आबू आऊंगा। ब्रह्माकुमारीज विराट प्रयास है। ब्रह्माकुमारीज में भाई-बहनों का रिश्ता है तो सारी समस्याएं यहाँ खत्म हो जाती हैं। जैसे ब्रह्माकुमारीज सेवाओं के विस्तार के लिए किसी से कोई खर्चा नहीं मांगते हैं, जैसे ही संग भी बर्बाद करता है। संग को सभी मिलकर चलाने हैं।



- डॉ. योहान भगवत, सारंगधामनाक, आगरासंग

एक मात्र संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य



मन एक स्थान है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो हमके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने ज्ञान आदयो को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। ये मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र को वास्तविक समर्पित है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारीज जैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है।

-माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र.

ऐसा परमात्मा उपस्थिति के बिना संभव नहीं

यहाँ मैंने देखा और अनुभव किया कि ऐसा एकमात्र संकल्प केवल ईश्वर के विराजने से ही होता है। मैं विश्व हिंदू परिषद में काम करता हूँ। हम भी सब स्वयं को कहते हैं कि भाई हिंदू तो ना? क्या इतिहास हिंदू को कि माता-पिता हिंदू थे? हर एक का जन्म अलग-अलग जगहों पर वहाँ पर मैं जब देखा हूँ तो ऐसा लगता है कि इस युग की ज़ातियों में से यह एक बड़ी ज़ात है। विश्व हिंदू परिषद की ओर से मैं आप सबका अभिनेदन करता हूँ। जिम्मा सौभाग्य है उनकी तो परमात्मा वहाँ लेकर आया है। हम सबके लिए एक धन्यता का भी अनुभव करता हूँ कि हम सब मनुष्यत्व लाने के लिए पुरुषार्थी हो रहे हैं। भगवान निमित्त बनाए इसमें बहुत सौभाग्य क्या हो सकता है। मैं पहली बार आया हूँ।



- अखंड कुमार, अध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद

राजयोग से बदलती है तकदीर



हर पल्लव की तकदीर बदल सकती है, शर्त है कि उसे सलोक से संवास जाये। हमारी राष्ट्रीय जानकी ने देश को एक आत्म-ऊर्जा का मंत्र दिया। जब परमात्मा किसी के जीवन के साथ जुड़ता है तो सट बहार आते हैं। राजयोग से परमात्मा ने सबके जीवन में आत्मलक्षित परिवर्तन कर दिया है। यहाँ ध्यान तथा प्रकृति के बीच में सामंजस्य का रहस्य है।

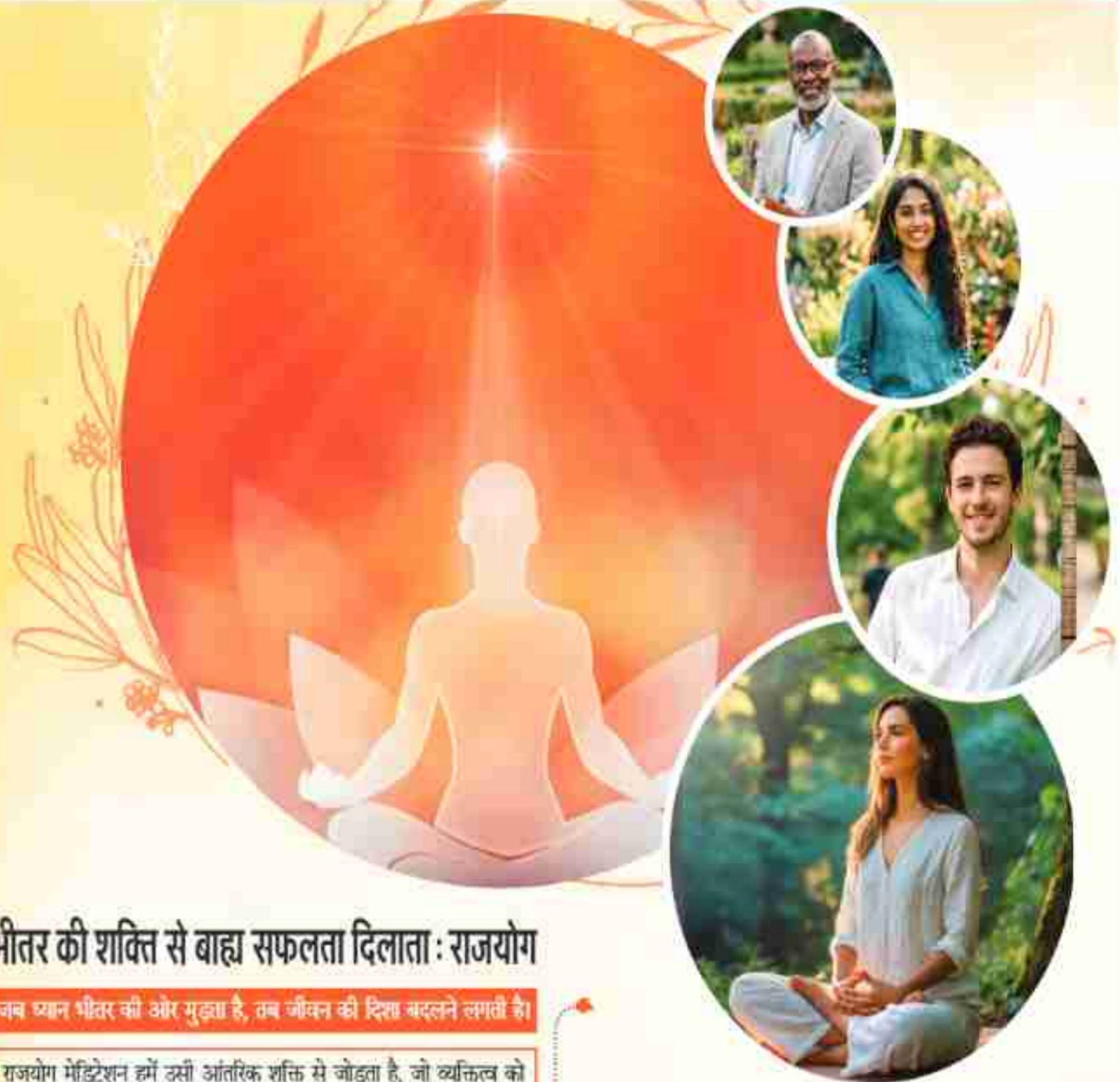
- स्वामी विद्यानांद जी

राजयोग निःस्वार्थ भावना को करता प्रखर

माँ-पिता द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य आज मैं संघालित हो रहा है, यह विश्व के अंदर कहीं भी नहीं है। हम परिवार का महामंत्र है तेरा ही तेरा, मेरा भी तेरा। ये बहनें राजयोग द्वारा स्वार्थ से उठकर समाज निर्माण का कार्य कर रही हैं। हमने महामूस किया कि राष्ट्रीय जानकी की प्रखरता एवं कुशलता को देखकर उन्हें भारत रत्न तो क्या, बल्कि नोबेल पुरस्कार मिलने जिम्मे को थे हकदार हैं।



-डॉ. लोकेश मूनि



भीतर की शक्ति से बाह्य सफलता दिलाता : राजयोग

जब ध्यान भीतर की ओर मुड़ा है, तब जीवन की दिशा बदलने लगती है।

राजयोग मेंडिटेशन हमें उसी आंतरिक शक्ति से जोड़ता है, जो व्यक्तित्व को शांत, स्पष्ट और प्रभावशाली बनाती है। राजयोग मेंडिटेशन का नियमित अभ्यास हमारे भीतर गहरा और सकारात्मक परिवर्तन लाता है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया गया यह सहज ध्यान हमें आत्मचेतना की ओर ले जाता है, जहाँ हम स्वयं को केवल शरीर नहीं, बल्कि शांति और शक्ति से भरपूर आत्मा के रूप में अनुभव करते हैं। इस अनुभव से मन की चंचलता धीरे-धीरे शांत होती है और विचारों में स्पष्टता आती है। राजयोग के अभ्यास से हमारे भीतर आत्मविश्वास, धैर्य और सहनशक्ति विकसित होती है। नकारात्मक भावनाएँ जैसे क्रोध, भय और तनाव कम होने लगते हैं, और उनके स्थान पर सकारात्मकता, प्रेम और संतुलन स्थापित होता है। इससे हमारे निर्णय अधिक सटीक और प्रभावशाली बनते हैं। धीरे-धीरे हम परिस्थितियों के प्रभाव में आने के बजाए उन्हें संभालने वाले बन जाते हैं। यही आंतरिक सशक्तता हमें 'उज्वल' बनाती है—एक ऐसा व्यक्तित्व, जो स्वयं भी शांत और संतुष्ट रहता है तथा दूसरों के जीवन में भी प्रकाश और प्रेरणा का स्रोत बनता है।

जीवन में साहस, संतुलन और सम्मान से भर देता राजयोग

जब मन स्वयं से जुड़ता है, तब भीतर छिपी शक्तियाँ प्रकट होने लगती हैं। राजयोग मेंडिटेशन हमें उसी आंतरिक ऊर्जा से जोड़कर जीवन को साहस, संतुलन और सम्मान से भर देता है।

राजयोग मेंडिटेशन हमारे भीतर छिपी आंतरिक शक्तियों को जागृत करने की एक सरल और प्रभावशाली विधि है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया गया यह अभ्यास हमें आत्म-चेतना में स्थिर करता है, जिससे आत्मविश्वास स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगता है। जब व्यक्ति स्वयं को एक शक्तिशाली आत्मा के रूप में अनुभव करता है, तो जीवन की चुनौतियाँ उसे कमजोर नहीं करती, बल्कि और अधिक दृढ़ बनाती हैं। राजयोग के नियमित अभ्यास से साहस विकसित होता है, जिससे हम कठिन परिस्थितियों का सामना निडरता से कर पाते हैं। सहनशीलता बढ़ने से हम दूसरों की बातों और परिस्थितियों को शांत मन से स्वीकार करना सीखते हैं। साथ ही, करुणा और संवेदनशीलता के गुण प्रकट होते हैं, जिससे हमारे संबंध मधुर और सहयोगपूर्ण बनते हैं। सबसे महत्वपूर्ण है आत्मसम्मान का विकास—जब हम अपनी वास्तविक पहचान को समझते हैं, तो भीतर से संतुष्टि और गरिमा का अनुभव होता है। इस प्रकार राजयोग हमें अंदर से सशक्त बनाकर जीवन को सफल और सार्थक बनाता है।



मैं शक्तिशाली हूँ

मे उज्वला हूँ

मैं शांत हूँ

मैं पवित्र हूँ

मन को चार्ज और व्यवहार को सुमधुर बनाता राजयोग

राजयोग मेंडिटेशन केवल ध्यान की प्रक्रिया नहीं बल्कि मन को रोजाना 'चार्ज' करने की एक आध्यात्मिक तकनीक है। जैसे हम शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करते हैं, वैसे ही मन को भी सकारात्मक विचारों से सशक्त बनाना आवश्यक है। योग करने का सही तरीका है - सुबह के शांत समय में कुछ मिनट स्वयं के साथ बैठना, अपने आप को आत्मा रूप में अनुभव करना और सकारात्मक संकल्प देना - "मैं शांत हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ, मैं पवित्र हूँ" इन संकल्पों को केवल बोलना नहीं, बल्कि महसूस करना और मन में चित्रित करना ही सच्चा योग है। योग की महत्ता इस बात में है कि यह हमारे विचारों को शुद्ध करता है। जब विचार बदलते हैं, तो व्यवहार अपने आप बदल जाता है। क्रोध, तनाव और नकारात्मकता कम होती है, और उनकी जगह धैर्य, प्रेम और सहनशीलता विकसित होती है। इससे हमारे संबंध मधुर और सशक्त बनते हैं। शरीर की एक्सरसाइज हमें शारीरिक रूप से फिट बनाती है, लेकिन राजयोग मानसिक और भावनात्मक शक्ति देता है। दोनों का संतुलन जीवन को सम्पूर्ण बनाता है। जब हम रोज सकारात्मक संकल्पों के साथ अपने मन को ताजा करते हैं, तो हम न केवल स्वयं शांत और खुश रहते हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं।

राजयोग मेंडिटेशन का पूरा प्रभावित ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विराट विराट



मुंबई-नेपिथिन सी रोड(मह.)। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रीति मूर्म से मुलाकात कर पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए सेवकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वमिणि कान।



हल्द्वानी-रामपुर रोड(उत्तराखण्ड)। माननीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से स्नेह मुलाकात कर शॉल ओढ़ाकर व ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. नौलम टोटी। साथ है माननीय मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, ब्र.कु. नीमा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।



लोहावट-फलोदी(राज.)। भारत सरकार के केंद्रीय संस्कृति व पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को परमाण्व स्मृति चिह्न भेंट करते हुए ब्र.कु. चीन।



देवबंद-प्रिय चौक(उ.प्र.)। श्री त्रिपुर मां बाला सुंदरी देवी मेले में लगाई ईश्वरीय ज्ञान एवं ध्यान प्रदर्शनी का रिचन काट कर शुभारम्भ करते हुए लोक निर्माण विभाग मंत्री कुंवर वृन्देश सिंह रावत। साथ है ब्र.कु. पारुल, नगर अध्यक्ष विपिन गर्ग, मेला अध्यक्ष विपिन त्यागी तथा अन्य।



एक समय की बात है, एक धर्मात्मा राजा ने अपने राज्य में एक अनोखी चुनौती रखी। उन्होंने घोषणा की कि जो कोई भी सच्चाई के साथ पूरा जीवन जीता होगा, उसे अपार धन और सम्मान से नवाजा जाएगा। इस घोषणा से पूरे राज्य में हलचल मच गई। हर कोई इस इनाम को पाने

के लिए उत्सुक था। उसी राज्य में एक गरीब लेकिन ईमानदार किसान रहता था। उसने अपने जीवन के हर कदम पर सच्चाई को अपनाया था। चाहे वह उसके खेती का काम हो या उसके पड़ोसियों के साथ उसका व्यवहार, वह हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलता रहा।

एक दिन, किसान ने सोचा कि वह भी राजा की चुनौती का हिस्सा बनेगा। वह राजा के दरबार में गया और अपनी सादगी और ईमानदारी की कहानियां सुनाई। उसने बताया कैसे उसने अपने खेत में सोने की मृदाएं पाई थीं, परंतु उसने उन्हें उसके असली मालिक को लौटा दिया। कैसे उसने अपने पड़ोसी की भूलवश भेजी गई अनाज की बोरी उसे वापस कर दी थी।

राजा उसकी कहानियों से प्रभावित हुए। उन्होंने महसूस किया कि किसान ने न केवल शब्दों में, बल्कि कर्मों में भी सच्चाई को अपनाया था। राजा ने उसे इनाम के रूप में सोने के सिक्के, नई भूमि और राज्य में सम्मानित स्थान दिया और आश्वासन दिया कि उसकी सच्चाई और ईमानदारी का राज्य भर में गुणगान किया जाएगा। इस घटना से प्रेरित होकर, अन्य लोगों ने भी सच्चाई के मार्ग को अपनाने का संकल्प लिया।

सच्चाई की जीत

यह घटना पूरे राज्य में सच्चाई और ईमानदारी के महत्व को उजागर करने वाली बन गई। लोगों ने समझा कि भले ही सच्चाई का मार्ग कठिन हो, परंतु उसके परिणाम हमेशा शुभ और संतोषजनक होते हैं।

शिक्षा : सच्चाई हमेशा जीती है। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्चाई का मार्ग चुनना हमेशा फलदायी होता है और अंत में, यही जीत की कुंजी होती है।

परमात्म ऊर्जा

बेहद की सेवा से दुआयें लेना और देना



बेहद की सेवा में समय लगाने से समस्या सहज ही भाग जायेगी क्योंकि चाहे अज्ञानी आत्माएं हैं, चाहे ब्राह्मण आत्माएं हैं लेकिन अगर समस्या में समय लगाते हैं व दूसरों का समय लेते हैं तो सिद्ध है कि वह कमजोर आत्माएं हैं, अपनी शक्ति नहीं है। जिसको शक्ति नहीं हो, पांव लंगड़ा हो और उसको आप कहो दौड़ लगाओ, तो लगायेगा या गिरेगा? तो समस्या के बश आत्माएं चाहे ब्राह्मण भी हैं लेकिन कमजोर हैं, शक्ति नहीं है, तो वह कहाँ से शक्ति लाये? बाप से डायरेक्ट शक्ति ले नहीं सकता क्योंकि कमजोर आत्मा है। तो क्या करेंगे? कमजोर आत्मा को दूसरे कोई का बल देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्फेक्शन देकर ताकत में लाते हैं तो आप सबमें शक्तियां हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हीं में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना - दाता बने। वह असमर्थ है, उन्हीं को समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग देने

से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज रिकेट है। आपको पुरुषार्थ में समय भी देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रिकेट से डड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालम्ब का अनुभव करेंगे। दुआयें लेना - वह सोखो और सिखाओ। अपना नैचुरल अटेंशन और दुआयें, अटेंशन भी टेन्शन मिक्स नहीं होना चाहिए, नैचुरल हो। नॉलेज का दर्पण सदा सामने है ही। उसमें स्वतः सहज अपना चित्र दिखाई देता ही रहेगा। इसलिए कहा कि परसैलिटी की निशानी है प्रसन्नचित्त।

यह क्यों, क्या, कैसे। यह के के की भाषा समाप्त। दुआयें लेना और देना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें - इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शांत हो। यह ऐसा, यह वैसा - ऐसा नहीं। सब अच्छा।



करमल-से 7(हरियाणा)। ब्रह्मकुमारी संस्थान के 90 वर्ष पूरे होने पर कला एवं संस्कृति प्रभाग को ओर से वैश्विक संस्कृति प्रेम, शान्ति, सद्भावना प्रोजेक्ट के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में संगीत प्रस्तुति देते हुए गायक ब्र.कु. युगतन,माउंट आबू। मौके पर उपस्थित रहे कला एवं संस्कृति प्रभाग की चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका टोटी, करमल उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम टोटी, नेशनल कोऑर्डिनेटर आर्ट एंड कल्चर विंग ब्र.कु. पुनम टोटी, ब्र.कु. विवेक,आमदाबाद, उत्तराखण्ड पर्यटन अकादमी राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम अध्यक्ष महामंडलेश्वर श्री श्री 108 हेमचन्द्र पर्यटन महाराज, विद्याधर जगमोहन आनंद, मेयर रणु बाला गुप्ता, निफा चेयरमैन प्रीतपाल सिंह पन्नु तथा अन्य।



कोलकाता-पश्चिम बंगाल। विश्व रंगमंच दिवस एवं टोटी जानकी जी की 6वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में संस्कृति मंत्रालय,भारत सरकार एवं ब्रह्मकुमारी संस्थान द्वारा मुंबई में आयोजित कार्यक्रम में संगीत प्रस्तुति देते हुए गायक ब्र.कु. युगतन,माउंट आबू। मौके पर उपस्थित रहे कला एवं संस्कृति प्रभाग की चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका टोटी, करमल उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम टोटी, नेशनल कोऑर्डिनेटर आर्ट एंड कल्चर विंग ब्र.कु. पुनम टोटी, ब्र.कु. विवेक,आमदाबाद, उत्तराखण्ड पर्यटन अकादमी राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम अध्यक्ष महामंडलेश्वर श्री श्री 108 हेमचन्द्र पर्यटन महाराज, विद्याधर जगमोहन आनंद, मेयर रणु बाला गुप्ता, निफा चेयरमैन प्रीतपाल सिंह पन्नु तथा अन्य।

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

Note:- After Transferring, please share the screenshot on these number.
(कृपया ट्रांसफर करने के बाद नीचे दिए गए नंबर पर स्क्रीन शॉट भेजें)
संपर्क- M- 9414006096, 941454344, 941472087

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
रांपोडक - ब्र.कु. गंगधर, ब्रह्मकुमारी, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹-720
Website: www.omshantimedia.org



6 ब्रह्माकुमारी बहनों ने किया विश्व परिवर्तन की सेवा में आजीवन समर्पित

चंडीगढ़-सेक्टर 33। राजयोग भवन में इस पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, पंजाब जेनरल हेड राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, फरीदकोट व राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, चंडीगढ़, राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, निर्देशक, सोनीपत रिट्रीट सेंटर, राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी, मुख्य संचालिका, सेक्टर-15 व पंचकुला सेवाकेन्द्र तथा राजयोगिनी ब्र.कु. विजय दीदी, मुख्य संचालिका, जौद मंचासीन मुख्य अतिथि के रूप में रहीं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय चीफ जस्टिस दया चौधरी की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह की शोभा को और बढ़ाया। राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने संबोधित करते हुए कहा कि जब माता-पिता अपनी कन्या के लिए वर चुनते हैं तो वे उसके गुण, घर और परिवार को देखते हैं। फिर भी यह निश्चित नहीं होता कि कन्या सदा सुखी रहेगी। किंतु



इस अलौकिक एवं दिव्य समर्पण समारोह के माध्यम से कन्या को स्वयं परमपिता, जगत नियंता परमात्मा ही वर के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जहाँ तक घर की बात है तो विश्व के 140 देशों में फैले ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र ही कन्या के अपने घर हैं और परिवार

इतना विशाल है कि 10,000 से अधिक समर्पित भाई-बहनों सेवाओं में लगे हुए हैं, जो एक-दूसरे को सहयोग देकर निरंतर आगे बढ़ते हैं। वहीं राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी ने कहा कि इस संस्थान में केवल वही कन्याएं समर्पित होती हैं जिन्हें स्वयं परमात्मा द्वारा चुना गया होता है। ये

वे आत्माएं होती हैं जो सेवा और त्याग के भाव को अपनाकर, परमात्मा के महावाक्यों का गहराई से मनन-चिंतन करती हैं तथा हर क्षण सेवा में तत्पर रहती हैं। आज का यह अवसर अत्यंत हर्ष का विषय है कि उन 6 कन्याओं का समर्पण स्वयं भगवान द्वारा स्वीकार हुआ है। राजयोगिनी ब्र.कु.

लक्ष्मी दीदी ने अपने संबोधन में समर्पित होने वाली बहनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज की स्वार्थपूर्ण दुनिया में, जहाँ लोग केवल अपने और अपनों के बारे में सोचते हैं, इन बहनों ने पूरे समाज और विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत नृत्य से हुई। इसके पश्चात् छोटे-छोटे बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से परमात्मा के प्रति समर्पण भाव को व्यक्त किया। समर्पण करने वाली 6 बहनों ने अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित करने की पावन प्रतिज्ञा की। इसी के साथ बहनों के माता-पिता ने भी सभा के समक्ष स्वेच्छा से अपनी कन्याओं को ईश्वरीय सेवा के मार्ग पर अग्रसर होने की स्वीकृति प्रदान की। समारोह के दौरान सम्बन्धियों का स्नेह मिलन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें परिवारजनों ने भाव विभोर होकर बहनों को शुभकामनाएं दीं। मंच संचालन ब्र.कु. कविता ने किया।

त्रिदिवसीय मीडिया महासम्मेलन में 400 मीडियाकर्मी ने लिया भाग

माउंट आबू से सत्य व शान्ति का संदेश मिलता है - सांसद बराला

ज्ञान संस्कार-माउंट आबू (राज.)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में संस्था के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित महासम्मेलन में देशभर के दिग्गज पत्रकार, चिंतक, विचारक, मीडिया शिक्षक ने मिलकर चिंतन-मंथन किया। उद्घाटन सत्र में "वैश्विक शान्ति की आवश्यकता में मीडिया की भूमिका" विषय पर देश भर से पधारे विद्वान वक्ताओं ने अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने कहा कि मैं माउंट आबू को दुनिया की सबसे दिव्य भूमि कहना चाहता हूँ। यहाँ ब्रह्माकुमारी में आने के बाद मन शान्त, बुद्धि स्थिर और प्रसन्नता का अनुभव हुआ। यह दुनिया में अपने आप में एक अनोखी संस्था है। विश्व में नारी सशक्तिकरण का इससे अच्छा उदाहरण हो ही नहीं सकता। इसने नये मानदंड स्थापित किए हैं। 140 देशों में यह संस्था परमात्मा के संदेश को पहुंचाने का कार्य कर रही है। यह संस्था आत्मा की शुद्धि का रहस्य भी हमको समझा रही है। जिसने इसे समझा वो तर गया। यहाँ आत्मा से परिचित करवाना और परमात्मा से कैसे आत्मसत हो, यह समझाने का कार्य भी ब्रह्माकुमारी कर रही है। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए मीडिया की जिम्मेदारी बड़ी हो जाती है। आप केवल खबर नहीं देते, बल्कि दृष्टि भी देते हैं। माउंट आबू से शान्ति का, सत्य का संदेश मिलता है और मीडिया इसे घर-

घर में पहुंचा सकती है। कृशाभाऊ ठरकर पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने संबोधित करते हुए कहा कि जब आप अपने कर्मस्थल

ईश्वरीय विश्व विद्यालय 90 वर्षों से यह संदेश दे रहा है, सारा विश्व एक परिवार है। आप यहाँ ऐसे समझें कि आप अपने घर में हैं। यहाँ शान्ति का जितना अनुभव

चिंतन के माध्यम से विश्व की बेहतरी के लिए काम कर रही है। जो हमें उसे आगे बढ़ाना होगा। तात्या पटनायक, संपादक द संवाद एंड कनक टीवी, भुवनेश्वर ने



पर लौटें तो एक नया संकल्प लेकर लौटें कि हम विश्व शान्ति में क्या योगदान दे सकते हैं। ये भी सच है कि मीडिया का कार्य सत्य सबके सामने रखना है, लेकिन सत्य दिखाते वक्ता उसे संवेदनशील भी होना पड़ेगा। मीडिया प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि दूसरों के प्रति शुभभावना और शुभकामना का भाव रखना चाहिए। ब्रह्माकुमारी के महासचिव तथा मीडिया विंग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि यह

कर सकते हैं, इन तीन दिनों में आप करें। नई दिल्ली डीडी न्यूज के सलाहकार संपादक मनोष बाजपेई ने कहा कि समाज में जो बीमारी है, उसका डायग्नोस करना बहुत जरूरी है। कथनी और करनी में अंतर होगा तो बहुत दिक्कत होगी। जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन बहुत जरूरी है। दैनिक ट्रिब्यून के संपादक नरेश कौशल, चंडीगढ़ ने कहा कि मीडिया की सकारात्मक भूमिका समय की जरूरत है। ब्रह्माकुमारी उपाध्यक्षा

कहा कि आज के माहौल में मीडिया का रोल बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें उन जिम्मेदारियों का निर्वहन पारदर्शिता से करना चाहिए। दैनिक देशोन्नति के संपादक डॉ. राजेश राजौर, बृलक्षणा की पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मधुरवाणी गुप ने स्वागत गीत से समां बोध दिया। डायमंड डॉस ग्रुप की कुमारी नीता ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर देश भर से आये अतिथियों को भाव विभोर कर दिया। मीडिया विंग की उत्तमसिद्ध राज्य

शान्ति हमारा संस्कार है - सुदेश दीदी

ब्रह्माकुमारी संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि विश्व शान्ति की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि सारा विश्व हमारा परिवार है। भारत शान्ति का दूत है। हम भारत माँ के लाल, हमारे अंदर वो शान्ति की शक्ति है। शान्ति हमारा संस्कार है। आत्मा को शान्ति चाहिए। जब तक हमने बीज को नहीं सींचा है, तब तक वो फल नहीं देगा। बीज को धरती चाहिए, जल चाहिए, सूर्य की शक्ति चाहिए। भारत भूमि की महिमा है यह फूलों का बगीचा था, यहाँ श्री लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। शान्ति आणी जब हम उसे प्रैक्टिकल में लाएंगे।

शान्ति की अनुभूति का आधार मेडिटेशन

एजुकेशन विंग की उपाध्यक्षा वरिष्ठ राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। उन्होंने कहा कि शान्ति की अनुभूति का आधार मेडिटेशन है। पहले आत्मा अपने आपको पहचाने की मैं कौन हूँ। ओमशान्ति का अर्थ ही है कि मैं वही हूँ जिसका स्वधर्म शान्ति है। मैं शान्ति के धाम से सृष्टि रंगमंच पर अभिनय करने आई हूँ। मैं आत्मा शान्ति सागर परमपिता की संतान हूँ।

समन्वयक ब्र.कु. मंजू दीदी ने उद्घाटन सत्र का सफल संचालन किया।

गलतियों से हार नहीं बल्कि स्वयं को सुधारने का अवसर मानें

नवा रायपुर-छ.ज.। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नवा रायपुर सेक्टर-20 स्थित 'एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड-शान्ति शिखर' देखने आये आर्मी स्कूल के बच्चों को ब्र.कु. अंशु दीदी ने संबोधित करते हुए कहा कि आत्मविश्वास सफलता की नींव है जो कि खुद की क्षमताओं और निर्णयों पर अटूट भरोसा रखने से उत्पन्न होती है। यह हमें जोखिम उठाने और चुनौतियों का सामना करने तथा लक्ष्य हासिल करने में मदद करता है। यह कोई जन्मजात गुण नहीं,



बल्कि छोटे-छोटे लक्ष्य को पूरा करके और सकारात्मक सोच से विकसित किया जा सकने वाला कौशल (हुरर)

है। उन्होंने आगे बताया कि जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का सीधा सम्बन्ध उस व्यक्ति के आत्मविश्वास से जुड़ा होता है।

विशेषज्ञों और सफल लोगों के अनुभव यह बतलाते हैं कि बुद्धिमत्ता या संसाधनों से भी आगे बढ़कर आत्मविश्वास ही वह शक्ति है जोकि एक साधारण व्यक्ति को असाधारण बनाती है। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है बल्कि कठिन परिस्थितियों में हमें डटे रहने का साहस भी देता है। दीदी ने आगे कहा कि आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति न केवल खुद पर भरोसा करता है बल्कि अपने डर पर काबू पाकर जोखिम उठाने से भी नहीं डरता। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सकारात्मक रूप से आत्म-मंथन

करना और छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें हासिल करना बहुत जरूरी है। असफलता से सीखें। गलतियों को स्वयं को सुधारने का अवसर मानें, उनसे हार नहीं मानें। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वास रातों-रात नहीं आता। छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करके अपना हौसला बढ़ाएं। अंत में मैं बस इतना ही कहूँगी कि मैंजिलें उन्हीं को मिलती हैं जिन्होंने सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है। खुद पर भरोसा रखें, क्योंकि आप अपनी परिकल्पना से कहीं अधिक योग्य और बुद्धिमान हैं। मौके पर वरिष्ठ ब्र.कु. महेश भी उपस्थित रहे।



दादी की प्रथम पुण्य तिथि विश्व एकता के रूप में मनाई | देश-विदेश से हज़ारों चाहकों ने दादी को किया याद | दादी के सेवासाथियों ने सुनाए साथ के अनुभव

रूहानी नेतृत्व और आध्यात्मिक निर्माण की प्रेरक धरोहर : दादी रतनमोहिनी



शांतिवन-राज। पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की प्रथम पुण्य तिथि विश्व एकता दिवस के रूप में मनाई गई। दादी की स्मृति में शांतिवन में बनाए गए "ज्ञान रत्न स्तंभ" पर देशभर से आये संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने पहुंच कर श्रद्धांजलि अर्पित की। डायमंड हॉल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब.कु. मोहिनी

दादी ने कहा कि दादी का जीवन योग, तपस्या, साधना की मिसाल था। दादी उन महान आत्माओं में से एक थीं जिन्होंने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की वर्ष 1937 में स्थापना से लेकर वर्ष 2025 तक 89वर्ष की यात्रा की साक्षी रही हैं। 40से अधिक वर्षों तक आपने युवा प्रभाग की अध्यक्ष की भी जिम्मेदारी संभाली। आपके नेतृत्व में आध्यात्मिक जागृति

हेतु युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा परयात्रा, साहित्य यात्रा और अन्य अधियान चलाए गए। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब.कु. मुन्नी दीदी ने भी अपने अनुभव साझा किए। महासचिव राजयोगी ब.कु. करुणा ने कहा कि दादी के साथ वर्षों तक सेवा करने का सौभाग्य मिला। दादी के जीवन से बहुत कुछ सीखा।

दादी रतनमोहिनी जी का जीवन सेवा, तपस्या और आध्यात्मिक जगत्-व्यक्त का अनुभव उल्लेखनीय था। इसीलिए प्रशासिका राजयोगिनी ब.कु. मुन्नी दीदी के तथा हैं उन्होंने न केवल संस्थान को तरक प्रेरणा प्रदान किया, बल्कि हज़ारों प्रेरणाओं को एक सौंदर्य जीवन जीने को प्रेरित भी है। उनकी विलेखनीय जी - आध्यात्मिक ज्ञान को सरलता से समझाकर उसे जीवन में उतारने को प्रेरणा देना। दादी रतनमोहिनी जी ने अपने जीवन के प्रारंभ से ही ईश्वरीय सेवा को अपनाया और उसे अपना ठोकाच करवाया। उनका मुख्य योगदान था - आध्यात्मिक शिक्षणों को तेवर करके, उन्हें प्रेरित करने और उन्हें एक तरक लीडर के रूप में प्रेरित करना। उनके कार्यदर्शन ने तेवर हुई हज़ारों शिक्षणों को प्रेरित कर न केवल केवल



उत्पन्न कर रही हैं और शांति, एकता तथा एकता के संदेश फैला रही हैं। उन्होंने देश-विदेश में व्यापक तथा से सेवा करते हुए विलेखनीय सेवाओं को आध्यात्मिकता से जोड़ा। उनके प्रेरक व्यक्तित्व से प्रेरित होकर अनेक चाहकों ने अपने जीवन को कदम दिलाया है - कुछ ने पूर्ण समर्पण से सेवा की, तो कई ने कुशल जीवन में तबे हुए भी आध्यात्मिक मूल्यों को जगत्-व्यक्त तथा प्रेरित करने का प्रयत्न प्रारंभ किया। दादी जी केवल एक प्रेरित नहीं, बल्कि एक तपस्वी आध्यात्मिक कार्यकर्ता थीं। उन्होंने अपने जीवन से एक शिक्षण कि सेवा केवल करी है, जो तबे अर्थात् बनकर दूसरों को भी प्रेरित करे। उनके द्वारा तेवर की गई "रतनमोहिनी" आज विश्व को शांति, संतुलन और सौंदर्य जीवन का मार्ग प्रेरित कर रही है।

घाणेरव में कल्याण सरोवर शिलान्यास व शिवालय का किया भूमि पूजन

मानव जीवन के कल्याण व आत्मिक उत्थान का केंद्र बनेगा "कल्याण सरोवर": राज्यमंत्री देवासी



राज्य-राज। घाणेरव में "कल्याण सरोवर" के शिलान्यास एवं शिवालय के भूमि पूजन समारोह का आयोजन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय माउंट आबू की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब.कु. मोहिनी दादी के सानिध्य में श्रद्धा व उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, ब्रह्माकुमारी संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनों व बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। यहाँ शिवालय में 70 फीट डैचर्ड का शिवलिंग बनेगा। इसके अलावा शिव नाचा की झोपड़ी, नखत्र गार्डन जैसे कई कार्य आगामी दिनों में पूरे होंगे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बाली विधायक पुष्पेन्द्र सिंह राणावत ने कहा कि

आत्मिक उत्थान का केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा कि यह आयोजन जनकल्याण और एकता के सूत्र में बांधने का माध्यम है। ब्रह्माकुमारी संस्था के सहयोग की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि सिरोंही में केंद्र होने के कारण व संस्था के कार्यों को नजदीक से जानते हैं। उन्होंने पाली, जालोर और सिरोंही के तीर्थ स्थलों के लिए हवाई पट्टी की आवश्यकता भी जताई, जिससे श्रद्धालुओं को सुविधा मिल सके। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब.कु. मोहिनी दादी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में आध्यात्मिक जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कल्याण सरोवर और शिवालय जैसे प्रकल्प मनुष्य को आत्मचिंतन, योग साधना

- शिवालय में 70 फीट डैचर्ड का बनेगा शिवलिंग
- बनेंगे नखत्र गार्डन व नाचा की झोपड़ी
- आरंभिक उत्थान का केंद्र बनेगा 'कल्याण सरोवर'

और सकारात्मक जीवन मूल्यों की ओर प्रेरित करेंगे। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि इस पुण्य कार्य में सहयोग देकर इसे जनकल्याण का केंद्र बनाएं। कार्यक्रम में भागशाहों ने महत्वपूर्ण सहयोग देने की घोषणा की। समारोह में ब.कु. सुचिता, ब.कु. कविता, घाणेरव प्रशासक चंद्रशेखर भेवाड़ा, समाजसेवी राजेश भेवाड़ा, विक्रम सिंह इंद्रा सहित ब्रह्माकुमारी सदस्य व ग्रामीण उपस्थित रहे।

भारत है विविधता में एकता के सिद्धांत का प्रतीक

दिल्ली। भारत की राजधानी में प्रतिष्ठित हयात रीजेंसी होटल में शुरू हुए विश्व सार्वजनिक शिखर सम्मेलन में प्रमुख नीति निर्माताओं, राजनेताओं, व्यापारिक नेताओं, वैज्ञानिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया। ताकि उन प्रमुख मूल्यों और कार्य योजनाओं पर चर्चा की जा सके जो मानवता के लिए एक शांतिपूर्ण, समृद्ध और टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित कर सके। भारत को शिखर सम्मेलन के आयोजन स्थल के रूप में चुना जाना कोई संयोग नहीं था। विश्व जन सभा के महासचिव एंड्री बेल्यानिनोव ने कहा, "भारत, जो विविधता में एकता के सिद्धांत का प्रतीक है, हमारे साक्षात् भविष्य को आकार देने वाले मूल्यों पर संवाद के लिए एक मंच बन जाता है।" ब्रिक्स सीसीआई के उपाध्यक्ष समीप शास्त्री ने कहा, "भारत हमेशा से मानता आया है कि दुनिया एक परिवार है। यह शिखर सम्मेलन इसी सोच को साकार करता है, क्योंकि हम यह पता लगाएंगे कि कैसे हमारे विविध दृष्टिकोण सभी के लिए अधिक समावेशी और टिकाऊ

विश्व जन सभा की वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ परिषद की बैठक में बोलते हुए राजयोगिनी ब.कु. संतोष दीदी ने रेखांकित किया, "जब हम स्वयं को केवल एक व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के एक भाग के रूप में देखते हैं, तब एकता और सद्भाव के विश्व का पुनर्निर्माण करना आसान हो जाता है। राजयोग ध्यान हमें अपने भीतर की उस दिव्यता को जगाने में सक्षम बनाता है या यूँ कहें कि हमें अपने परमपिता ईश्वर की सच्ची छवि और स्वरूप प्राप्त करने में मदद करता है।" विश्व सार्वजनिक शिखर सम्मेलन के अंतर्गत मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित गोल्डमेज सम्मेलन "आध्यात्मिक एकता पारंपरिक मूल्यों से शांति की संस्कृति तक" में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब.कु. चक्रधारी दीदी ने विशेष रूप से ब्रह्माकुमारीज के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा को याद किया, जिनकी शांति और वैश्विक एकता प्राप्त करने में महिलाओं की अनूठी भूमिका की दूरदृष्टि

चक्रधारी दीदी और संतोष दीदी ने मार्च 2026 में दिल्ली, भारत में आयोजित विश्व जन शिखर सम्मेलन(विश्व जन सभा और त्रिवेदा चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री) में लिया भाग



भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।" ब्रह्माकुमारीज महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब.कु. चक्रधारी दीदी और ब्रह्माकुमारीज, सेंट पीटर्सबर्ग, रूस की निदेशिका राजयोगिनी ब.कु. संतोष दीदी को इस अंतर्राष्ट्रीय मंच की आयोजन समिति द्वारा शिखर सम्मेलन के कार्यक्रमों में प्रतिभागी और वक्ता के रूप में आधिकारिक तौर पर आमंत्रित किया गया था।

अपने समय से बहुत आगे थी। उन्होंने कहा, "विश्व की वर्तमान घटनाओं से हमें उनकी दूरदर्शिता का पुख्ता प्रमाण मिल रहा है। आज की दुनिया को एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में सभी के प्रति मातृत्व भाव की सख्त जरूरत है।" ब.कु. हुसैन, ओआरसी और ब.कु. तमन्ना, शांति नगर, दिल्ली को भी शिखर सम्मेलन के कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला।